महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अगस्त, 2016 वर्ष 19, अंक 08
विक्रमी सम्वत् 2073
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 20

स्वतन्त्र भारत में प्रण करें कि...

❑ स्व. पिशोरी लाल प्रेम

अफ्रीका में गांधी जी डरबन से प्रिटोरिया जाने के लिए ट्रेन के प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठे। रात को नौ बजे ट्रेन नाटाल की राजधानी के मेरित्सबर्ग स्टेशन पर पहुंची। वहां एक अंग्रेज यात्री उस डिब्बे में आया। गांधी जी को देख कर वह घृणा का प्रदर्शन कर डिब्बे से बाहर चला गया, और रेलवे के एक अधिकारी को साथ लेकर फिर डिब्बे में आया। अधिकारी ने गांधी जी से कहा, तुम आखिरी डिब्बे में चले जाओ। गांधी जी ने कहा मेरे पास प्रथम श्रेणी का टिकट है और मैं डरबन से इसी डिब्बे में बैठ कर आया हूं। रेलवे अधिकारी ने कहा टिकट की कोई बात नहीं, तुम्हें इस डिब्बे से उतरना पड़ेगा। गांधी जी ने उतरने से इंकार कर दिया। तब गांधी जी को पुलिस द्वारा बल पूर्वक डिब्बे से खींच कर उतार दिया। ट्रेन चल दी। गांधी जी ने सारी रात वेटिंग रूम में ठण्ड से कांपते हुए काटी। और अगले दिन लाचार होकर दूसरी ट्रेन में गये।

अफ्रीका में ही दूसरी बार फिर गांधी जी को एक शहर से दूसरे शहर जाना था। उन्हें इस शर्त पर प्रथम श्रेणी का टिकट दिया गया कि यदि मार्ग में गार्ड उन्हें प्रथम श्रेणी के डिब्बे से उतार कर तीसरे दर्जे के डिब्बे में जाने को कहें तो उन्हें तीसरे दर्जे के डिब्बे में बैठ कर जाना पड़ेगा। गांधी जी ट्रेन गांधी जी ट्रेन के प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठ गए। गाड़ी चल पड़ी। मार्ग में गाड़ी एक स्टेशन पर रुकी गार्ड आया, गांधी जी को तीसरे दर्जे के डिब्बे में जाने को कहा। उस डिब्बे में केवल एक ही अंग्रेज यात्री था। उसने गार्ड को कहा, मुझे कोई कष्ट नहीं हो रहा, इस बेचारे को मत उतारो। गार्ड बड़बड़ाता हुआ चला गया।

भारत को बचाओ

बचाओ भारत को भगवान्।
नाथ एकता का वर दीजे।
भेदभावना को हर लीजे।
जिससे मोहतमिस्त्रा छीजे।
वही दीजिये ज्ञान।। बचाओ।
देश द्रोह का जाल नष्ट हो।
नहीं कोई भी पथभ्रष्ट हो।
प्रेम पूर्ण सन्मार्ग सृष्ट हो।
होवें सभी समान।। बचाओ।
शीघ्र नष्ट आतंकवाद हो।
प्रोन्नत प्यारा राष्ट्रवाद हो।
नहीं किसी में भी विवाद हो।
कीजे यही निदान।। बचाओ।
देश भक्ति का पाठ पढ़ा दो।
शीघ्र सभी में प्रेम बढ़ा दो।
उन्नति के सोपान चढ़ा दो।
हो सबका कल्याण।। बचाओ।
कर्मवीर हों देश निवासी।
धर्म और ईश्वर विश्वासी।
सब शुभ कर्मों के अभ्यासी।
हो जग में सम्मान।। बचाओ।

–आचार्य रामकिशोर शर्मा, सोरों एटा, उत्तर प्रदेश

एक बार पुनः अफ्रीका में गांधी जी एक घोड़ा गाड़ी में कहीं जाना चाहते थे। अन्य यात्री गाड़ी की पिछली सीटों पर आराम से बैठे थे। कोचवान गांधी जी को अन्य यात्रियों के साथ बैठाना नहीं चाहता था, कोचवान की अपनी सीट के साथ एक और सीट बनी हुई थी। गांधी जी को उस सीट पर बैठने को कहा। गांधी जी ने उस सीट पर बैठना अपना अपमान समझा। परन्तु विवश हो कर उस सीट पर बैठना ही पड़ा। मार्ग में एक अंग्रेज यात्री गाड़ी की पिछली सीट से गांधी जी की सीट के पास आया, सीट के आगे पांव रखने के स्थान पर एक टाट पड़ा था। उसने गांधी जी को कहा, तुम इस टाट पर बैठ जाओ, क्योंकि इस सीट पर मुझे बैठना है। गांधी जी इस घोर अपमान को न सह सके और अपनी सीट से उठने के लिए उन्होंने इन्कार कर दिया। अंग्रेज यात्री क्रोधित होकर गांधी जी को पीटने और गालियां देने लगा। गांधी जी चुपचाप गालियां सुनते रहे और मार खाते रहे। परन्तु अपनी सीट के साथ चिपके रहे। तब अन्य यात्रियों को कुछ दया आई। उन्होंने गांधी जी को बचाया।

इंग्लैंड में गांधी जी बाल कटाने के लिए एक नाई की दुकान पर गए। नाई ने उनके बाल काटने से इन्कार कर दिया। गांधी जी ने नाई से कहा जब आप कुत्तों के बाल भी काटते हैं, तो मेरे बाल क्यों नहीं काटते? नाई ने कहा यदि मैं आपके बाल काटूं तो मेरे अंग्रेज ग्राहक मुझ से नाराज हो जायेंगे, मेरा काम ठप्प हो जायेगा।

इंग्लैंड में ही एक होटल पर लगे हुए बोर्ड पर यह लिखा हुआ था–यहां हिन्दुस्तानियों और कुत्तों का आना मना है। (इंग्लैंड में ही क्यों,

(शेष पृष्ठ 18 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी के नेतृत्व में डी.ए.वी. ने स्थापित किये कीर्तिमान

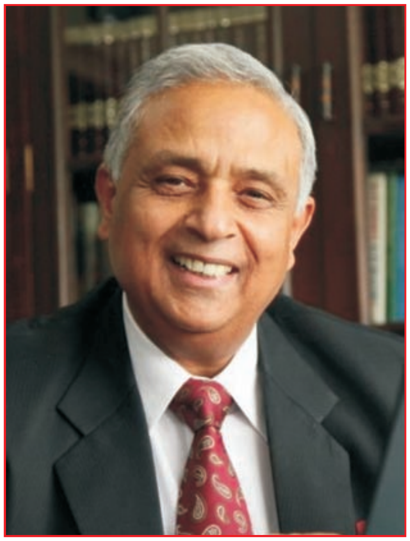

पिछले लगभग 4 वर्षों में डी.ए.वी. शिक्षण संस्थान ने आपके नेतृत्व में असंख्य कीर्तिमान स्थापित किए जिनकी चर्चा सार्वजनिक तौर पर कभी नहीं हुई। कारण डॉ. सूरी जी की धारणा है कि कीर्तिमान, यश और दिखावे के लिए नहीं होते। सेवा कार्य क्षेत्र में किया गया कोई भी शुद्ध कार्य सात्विक धारणा से किया हुआ वह कार्य है जिसे समाज सेवा का नाम दिया जाता है। वह कोई कीर्तिमान स्थापित करने के लिए नहीं किया जाता, स्वत: ही कीर्तिमान हो जाता है। जैसे एक धावक अपनी पूर्ण शक्ति के साथ दौड़ता है लेकिन किस पल वह एक कीर्तिमान स्थापित कर लेता है उसे इस बात का अहसास दौड़ने के बाद दौड़ पूर्ण करने पर ही ज्ञात होता है कि उसने स्वयं कुछ मिनट या कुछ सैकेण्ड से कीर्तिमान स्थापित कर लिया है।

ठीक इसी प्रकार की धारणा डी.ए.वी. प्रधान आर्यरतन डॉ. पूनम सूरी जी पर लागु होती है। निष्ठा, लगन और सहजभाव के कार्य करते रहते है। जिससे नए निर्णय लेते है, नये प्रयास करते है, जैसे कि शिक्षा को किस तरह उच्च स्तर पर पहुँचाना है, किस प्रकार बालकों में नैतिक शिक्षा के माध्यम से ज्ञान बढ़ाना है, वेदों का सार भाव छोटी आयु से ही बालकों में डालना है, यज्ञ से किस प्रकार असंख्य बच्चों को जोड़ना है। बच्चों के बाल्यकाल से ही उनकी जड़े वैदिक मान्यताओं के प्रति सुदृढ़ हो जाये। साथ ही जल बचाओ, स्वच्छ समाज और देश, रक्तदान जैसे मानवीय कार्यो से युवाओं को जोड़ना कब कीर्तिमान स्थापित कर लेते हैं स्वयं उनको भी जानकारी नहीं रहती। जैसे एक यात्री निरन्तर चलता है, क्योंकि उसका ध्येय गन्तव्य तक पहुंचना है। कितने समय में कितने शीघ्र, ध्येय यह नहीं है, केवल चलते रहना और गतिशील बने रहना है।

बस यही कारण है कि डॉ. सूरी कार्य करने में निष्ठा रखते हुये निरन्तर प्रयत्नशील रहते है और कब कोई कार्य कीर्तिमान बन जाता है उसकी उनको जानकारी भी नहीं होती।

उदाहरणार्थ आज से एक वर्ष पूर्व आपने यह निर्णय लिया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस पर डी.ए.वी. के प्रत्येक शिक्षण संस्था के युवाओं द्वारा रक्तदान किया जाएगा। एक ही दिन में एक निर्धारित समय के अन्दर ही इस कार्य को करना था। यह डी.ए.वी. के छात्रों को स्वामी दयानन्द जी के जन्मदिवस पर इस महानतम कार्य को करने की प्रेरणा देनी थी।

स्थानीय आयोजकों द्वारा यह निर्धारित था कि स्थानीय रक्त बैंक में इस रक्त को जमा करवाया जाए। आर्य जनता को जानकर हर्ष होगा कि यह भी एक कीर्तिमान स्थापित हो गया। जिसमें एक निर्धारित समय में 24500 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ जो कि भारत में इससे पूर्व एक दिन में निर्धारित समय के अन्दर कभी नहीं हुआ। किन्हीं राज्यस्तरीय रक्त

बैंक वालों ने रक्त लेने से मना किया क्योंकि उनके पास निर्धारित रक्त यूनिट के अतिरिक्त उसे सुरक्षित रखने के लिए उपकरण नहीं थे, गाड़ियों से शीघ्र ही निकटवर्ती शहरों में रक्त पहुँचाया गया।

कोई और संस्था इस कार्य को करने से पूर्व लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड के अधिकारियों एवं गिनीज बुक ऑफ रिकार्ड के अधिकारियों को सम्पर्क कर उसमें अपना नाम दर्ज करवाने का प्रयास करते। लेकिन आदरणीय डॉ. पूनम सूरी जी ने ऐसा कुछ नहीं किया। क्यों ध्येय कीर्तिमान बनाना नहीं था केवल शुद्ध सात्विक समाज सेवा के कार्यो से आज के युवा वर्ग को जोड़ना मात्र था।

इसी के साथ दूसरा उदारहण लिजिए। अभी निकट भविष्य में कुछ माह पूर्व ही छत्तीसगढ़ राज्य द्वारा मुख्यमन्त्री मॉडल स्कूल के नाम से 72 विद्यालयों का निर्माण किया गया जो कि बस्तर, सुकमा, बीजापुर, नारायण एवं दंतेवाड़ा जैसे असंख्य पिछड़ा एवम् दूरवर्ती क्षेत्रों में संचालित थे। जो कि अतिथि शिक्षकों के भरोसे चल रहे थे। इन स्कूलों के लिए केन्द्र सरकार द्वारा अनुदान दिया जाता था परन्तु वर्ष 2015 में केन्द्र ने

(शेष पृष्ठ 19 पर)

क्या ये संन्यास नहीं हैं?

संन्यास का अर्थ अधिकतर लोग संसार से मुंह मोड़ना, त्याग अथवा वैराग्य से जीवन जीने को ही संन्यास मानते हैं भौतिकवादी जीवन में जिस प्रसिद्धि को प्राप्त करना उपलब्धियों, सुखों एवं सुखों को आधार माने जाने वाले साधनों में रुचि न लेना भी संन्यास समझा जा सकता है। दूसरे शब्दों में संन्यास अपने जीवन में एक प्रमुख प्रकार का निर्णय लेना भी कहा जा सकता है, लेकिन क्या सच्चाई यह नहीं है कि जीवन को सही अर्थों में जीने का नाम ही संन्यास होना चाहिये और यही हमारी सभी समस्याओं का समाधान है।

जीवन में अधिकतर परेशानियां एवं दु:ख किन्हीं स्थितियों के कारण या व्यक्तियों के प्रति लगाव के कारण उत्पन्न होता है। हम समृद्ध होना चाहते हैं, अर्थ कमाना चाहते हैं, क्योंकि धन के प्रति हमारा लगाव है और उसकी प्राप्ति के लिये हम कई प्रकार के अनुचित तरीके भी अपनाते हैं। गलत तरीकों में जोखिम है और उस जोखिम का सामना भी करना पड़ता है और इसी कारणवश दुख व परेशानी उठानी पड़ती है। जो व्यक्ति उचित तरीके अपनाते हैं उन्हें इच्छुक मात्रा में धन प्राप्त नहीं होता जिससे मन कुंठित हो उठता है और आशक्ति और प्रबल होती है वह पूरी नहीं हो पाती इसलिये संताप होता है। यश, समृद्धि, अधिकार सम्पत्ति के प्रति जब भी तीव्र इच्छा होगी तो भी दुख होगा। अब समझ में यह आता है कि उपलब्धियां मिल जाये तो भी दुख होगा और यदि न मिले तो भी दुख ही होगा, क्योंकि यह तो स्पष्ट है इच्छुक अर्थ मिलने पर उसकी रक्षा की चिन्ता तथा और बढ़ाने की लालसा और इच्छुक धनराशि प्राप्त न होने पर उसे पा लेने की लालसा अधिक कठोरता से दुख देती है।

शुद्ध अर्थों में जिसे संन्यास कहा जाना चाहिये वह इन उपलब्धियों का निषेध करना नहीं है। दरअसल आशक्ति की आतुरता ही दुख को जन्म देती है। सामान्य जीवन में स्वाभाविक कार्यों को अनाशक्त भाव से करते रहने का नाम ही संन्यास है। किसी भी कार्य के प्रति अपनी प्रबल इच्छाओं को कम कर लेने से वह कार्य ज्यादा कुशलता से होता है और उसके परिणाम भी सुखद होंगे ऐसी धारणा है। एक डाक्टर का उदाहरण लीजिये जो आपरेशन करते समय रोगी के प्रति किसी प्रकार की भावुकता या आवेग से भर जाये, तो वह अपना कार्य ठीक से नहीं कर पायेगा। कुश्ती लड़ने वाले पहलवान अगर द्वेष भाव से क्रोध में आकर कुश्ती का खेल खेले तो वह खेल नहीं युद्ध हो जायेगा।

संन्यास क्या जीवन को यथार्थ रूप से जीने के लिये प्रेरित नहीं करता। इस यथार्थ की परिभाषा में संन्यासी की दृष्टि से आत्मतत्व ही शुद्ध है बाकी सब सम्बन्ध अस्थायी कामचलाऊ व कुछ समय के लिये है। एक अभिनयकर्ता किसी पात्र का अभिनय करते समय अपने मूल अस्तित्व को न भूलते हुये उस चरित्र को भावुकता से उसमें तल्लीन होकर अपने अभिनय के माध्यम से सफलतापूर्वक निभाता है और कभी कभी उस चरित्र में इतना लीन हो जाता है कि कुछ क्षणों के लिये स्वयं को वही मानने लग जाता है। (रामलीला करते समय राम का अभिनय करते समय कलाकार के व्यक्तित्व को देखें) लेकिन नाटक खत्म होते ही वह अपने मूल अस्तित्व में वापिस आ जाता है यह उदाहरण देने का मेरा अभिप्राय यह है कि व्यक्ति जन्म और मृत्यु के बीच कामचलाऊ, अस्थायी सम्बन्धों में उलझ जाता है अगर जन्म व मृत्यु के बीच के भाव को एक नाटक समझ लिया जाये तो व्यक्ति केवल एक चरित्र का अभिनय कर रहा है उसका मूल कुछ और है यही बात समझने वाली है।

उपरोक्त दृष्टि यदि किसी में विकसित हो जाये, तो कोई भी सम्बन्ध या व्यवहार मन को बोझिल नहीं करता जिस समय मन बोझिल हो, तो उन क्षणों को बीत जाने दें तो आप देखेंगे कि मन:स्थिति जस की तस हो जायेगी। मन में न क्षोभ आयेगा न ही रोष। आज के तनाव और संघर्षपूर्ण वातावरण में उपरोक्त लिखित संन्यास ही व्यक्ति को बचा सकता है। अपनी इच्छा और उद्देश्य को पाने के लिये वह निरन्तर संघर्ष करता है वह सोचता है कि उसे पाने के बाद वह सुखी और चैन से रहेगा वही अन्ध इच्छा उसे अपना गुलाम बना कष्ट देती है।

एक और उदारण से आपको अपनी बात समझाने का प्रयास कर रहा हूं। आप किसी उच्च पद को प्राप्त करना चाहते हैं। मान लीजिये मंत्री पद के लिये आप जी जान से जुट जाते हैं अपना परिवार, बच्चे, आराम सब कुछ भुला बैठते हैं और अपनी राजनीतिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिये समय पर खाना पीना भी भूल जाते हैं। इस स्थिति में क्या आपको नहीं लगता कि मंत्री पद तो जब मिलना होगा तब मिलेगा आपने अपने वर्तमान को नष्ट कर ही लिया और फिर भी यह जरूरी नहीं कि यह पद मिलने के बाद आप इससे आगे के उच्च पदों की दौड़ में नहीं लग जायेंगे। आपको नहीं लगता कि पद पाने से पूर्व ही आपने उस पद की गुलामी स्वीकार कर ली है।

किसी पद को पाने की लालसा की मैं निन्दा नहीं कर रहा लेकिन जिस व्यक्ति ने अपनी जीवन पद्धति को संन्यासी के रूप में बदल लिया है वह भी मंत्री पद पाने का प्रयत्न कर सकता है लेकिन वह उसके लिये अपने वर्तमान को बर्बाद नहीं कर देता वह उन्हें भी समग्रता से जीता है ठीक वैसे ही जैसे नाटक में मंत्री पद का अभिनय करने वाला उस पद के लिये अभिनय के रूप में जोड़ तोड़ करता है, भाषण देता है, अन्य पात्रों को अपने साथ संगठित करता है लेकिन वह अच्छी तरह याद रखता है कि वह एक आम व्यक्ति है और वह एक ही समय में नाटक में रहते हुये नाटक से बाहर भी रहता है। संन्यास को जीवन का शिखर कहा गया है और वैदिक परम्परा के अनुसार संन्यास अन्तिम आश्रम है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ के बाद संन्यास को जीवन की परिपक्व स्थिति कहा गया है लेकिन मेरा मानना यह है कि संन्यास एक जीवन पद्धति है। ब्रह्मचारी भी संन्यासी जैसा हो सकता है, गृहस्थ भी संन्यासी जैसा हो सकता है और वानप्रस्थी भी संन्यासी जैसा हो सकता है केवल भगवे वस्त्र धारण करने से ही व्यक्ति संन्यासी नहीं हो जाता है। आपको आर्यसमाज के क्षेत्र में ही न जाने ऐसे असंख्य गृहस्थी व ब्रह्मचारी मिल जायेंगे जो कि मेरी धारणा के अनुसार संन्यासी जैसे ही हैं।

अजय टंकारावाला

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2016 के चित्रों को देखने और डाऊनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से www.facebook.com/ajaytankarawala पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

अंधविश्वास के मकड़जाल में भटकता मानव

❒ अर्जुनदेव चड्डा

आधुनिक ज्ञान विज्ञान के युग में कभी-कभी ऐसी घटनाएं हो जाती हैं जो कि व्यक्ति को सोचने पर मजबूर कर देती हैं कि वह किस युग में जी रहा है। यह घटना राजस्थान के कोटा शहर की है जहां 2012 में भीलवाड़ा से ईलाज के लिए कोटा लाते समय एक महिला का कोटा में निधन हो गया। निधन के एक वर्ष पश्चात पूरा परिजनों के साथ बस भर कर कोटा आया और महिला की कोटा में जिस स्थान पर मृत्यु हुई वहां कुछ टोने-टोटके करने लगे। लोगों ने पूछा तो उन्होंने बताया कि उनको किसी पण्डित ने कहा है कि घर में जो परेशानियां चल रही हैं उसका कारण मृतका की आत्मा का भटकना है, इसलिए भटकती हुई आत्मा को साथ लेने आए हैं।

यह तो एक उदाहरण मात्र है ऐसी अनेकों घटनाएं, तथ्य विज्ञान और दर्शनशास्त्र के तर्को से परे प्रतिदिन समाज में देखने तथा सुनने को मिलती हैं। यह देखकर आश्चर्य होता है कि आज के इस वैज्ञानिक युग में भी मानव अंधविश्वासों के घोर अंधेरे में फंसा पड़ा है।

आज भी कुछ स्वार्थी पाखण्डियों द्वारा फैलाये जा रहे मिथ्या प्रचार के कारण शिक्षित होते हुए भी लकीर का फकीर बना हुआ है जबकि धार्मिक ग्रंथ किसी भी प्रकार के टोन-टोटके तथा अंधविश्वास का समर्थन नहीं करते हैं।

वशीकरण, तांत्रिक क्रियाएं, गंडे ताबीज, भूत-प्रेत की कपोल कल्पना, धातु प्लास्टिक से बने यंत्र न जाने अंधविश्वास किन-किन रूप में लोगों के मन में घर किये हुए है।

कुछ चालाक व्यक्ति मानव मन में व्याप्त इसी भय नामक कमजोरी का फायदा उठाकर कभी नारियल को मन्त्र से फोड़कर दिखाना, नींबू में खून दिखाना, सफेद सरसों के दानों को काला करना, रंगीन फूलों को रंगहीन कर देना, भभूत प्रकट कर खिलाना, बिना किसी साधन के जल छिड़क कर दीपक जलाना, आत्माओं से बातें करना जैसे माध्यमों से लोगों को भयभीत कर अपना उल्लू सीधा करते नजर आते हैं।

सबसे बड़ी बात है कि यह सब होता है धर्म के नाम पर। धर्म की आड़ में फल-फूल रहे इस अंधविश्वास के धंधे में कितने ही लोग अपनी जीवन भर की कमाई डुबाते नजर आते हैं और अंत में मिलता है उन्हें सिर्फ धोखा तथा शारिरिक, मानसिक यंत्रणा। जिन शारीरिक व मानसिक परेशानियों से बचने के लिए वे तन्त्र-मन्त्र के इस मार्ग को चुनते हैं, अंत में स्वयं को ठगा हुआ महसूस करते हुए लुटे-पिटे तथा हताश दिखाई पड़ते हैं और कई बार स्थिति इतनी विकट हो जाती है कि व्यक्ति को आत्महत्या तक करनी पड़ती है।

इन अंधविश्वासी अनुष्ठानों की मार का सामना सर्वाधिक महिलाओं को करना पड़ता है। कभी भूत-प्रेत, चुड़ैल तथा डायन न जाने कितने रूपों में उन्हें प्रताड़ित होना पड़ता है। यहां तक अनुष्ठानों की आड़ में शारीरिक शोषण का भी सामना करना पड़ता है।

सत्यता तो यह है कि इन सभी अंधविश्वासी कर्मकाण्डों का कोई भी धार्मिक कारण नहीं है। वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि धर्मशास्त्रों में इनका कोई उल्लेख ही नहीं है। केवल मानव मन में व्यास भय तथा सांसारिक कारणों से जीवन में आने वाली कठिनाईयों का फायदा उठा कर कुछ लोगों ने मनुष्यों के शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक शोषण का एक तंत्र विकसित कर लिया है जिसे चालाकी से धार्मिक रूप दे दिया गया है।

वेद, उपनिषदों तथा दर्शन में किसी भी रूप में आत्माओं के भटकने, उनसे वार्तालाप करने आदि का कोई भी उल्लेख नहीं है। किन्तु इन ग्रंथों के ज्ञान से अज्ञान व्यक्ति केवल धार्मिक अंधविश्वास के नाम पर लुटता चला जाता है।

गीता में स्पष्ट लिखा है कि जैसे व्यक्ति पुराने कपड़े बदलकर नये कपड़े पहन लेता है, उसी प्रकार आत्मा एक शरीर को छोड़कर ईश्वर की व्यवस्था अनुरूप नये शरीर को धारण करती है। आधुनिक विज्ञान भी इसी बात का समर्थक है।

वास्तव में अंधविश्वास के इस धंधे से रोजी रोटी कमाने वाले इन चालाक लोगों ने विज्ञान को ही अपना माध्यम बनाया हुआ है। विज्ञान की रासायनिक क्रियाओं, विधियों का प्रयोग कर ये लोग चमत्कार आदि दिखाकर लोगों के मन में अपनी पैंठ जमा लेते हैं और बाद में ऐसे लोगों का शोषण करते हैं। उदाहरण के रूप में परमैगनेट ऑफ पोटास को ग्लिसरीन पर गिरा कर आग प्रकट करना, कटहल के दूध लगे चाकू से नींबू काटने पर खून टपकना दिखाना, नौसादर तथा चूने के मिश्रण को सूंधा कर बेहोशी दूर करना तथा बिच्छू के डंक का उपचार करना। फिटकरी के घोल से पहले लिखना जो दिखाई न दे फिर बाद में उस पर चुकन्दर के रस को प्रयोग कर उसे दिखाना जैसे अनेकों प्रकार के तन्त्र-मन्त्र, जादू टोने-टोटके के पीछे विज्ञान तथा उसकी विधियां छुपी हुई हैं न कि कोई रहस्यमयी शक्ति।

इसलिए सर्वप्रथम तो मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने परिवार में दुख-तकलीफ आने पर उसके कारणों को खोज कर निवारण करे। धार्मिक अंधविश्वास से बचे, वेद उपनिषद् आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय करें। जिससे धर्म का सत्य ज्ञान हो सके तथा यदि कोई चालाक तंत्र मंत्र के नाम पर भोले भाले लोगों को ठग रहा हो तो विज्ञान के माध्यम से बेनकाब करे। क्योंकि वेद कहते हैं ''अंधन्तम प्रतिशन्ति ये अविद्याम् उपासते'' जो अविद्या में घिरे रहते हैं वे ही अंधविश्वास रूपी अंधकार में गिरते हैं इसलिए ज्ञान के माध्यम से समस्याओं का निवारण करे न की तंत्र-मंत्र तथा पाखण्ड से।

स्मरण रहे कि लगभग आठ माह पूर्व भी कोटा के महाराव भीमसिंह अस्पताल में इसी प्रकार के पाखण्ड का पूरा नाटक किया और ढोंगियों ने आत्मा को पकड़ने का दावा किया।

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने तब और अब हुए इन अंधविश्वासों को समाचार पत्रों में पढ़ा तो उसी 6 समय कोटा कलेक्टर को फोन कार ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो का आग्रह किया।

व्यस्त यातायात को रोककर पाखण्डी पाखण्ड करते रहे और आमजन परेशान होता रहा और प्रशासन सोता रहा। शासन-प्रशासन-पुलिस को इस प्रकार के आडम्बरों को तुरन्त रोकने के आदेश जारी करने का निवेदन किया।

- जिलाप्रधान आर्य समाज जिला सभा-4-प-28, विज्ञाननगर,
कोटा 324005 (राज.) मो. 09414187428

आर्य समाज क्रान्तिकारियों की जननी है

❒ खुशहाल चन्द्र आर्य

आर्य समाज संस्थापक महर्षि दयानन्द स्वयं देशभक्त थे, आपने सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में सहयोग दिया था। उन गुरु स्वामी विरजानन्द प्रज्ञाचक्षु होते हुए भी सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में एक विशेष भूमिका निभाई थी जिस संस्था के संस्थापक अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में यह लिखकर कि विदेशी राज्य चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, फिर भी उससे अपना स्वदेशी राज्य कहीं अच्छा होता है। इस उद्घोष से क्रान्तिकारियों ने बहुत प्रेरणा ली। बाल गंगाधर तिलक ने तो सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर यहां तक कह दिया कि आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। एक घटना स्वामी जी की जीवनी में भी आती है कि अजमेर में लार्ड बुक ने स्वामी जी से पूछा कि आपको अपने वेद प्रचार कार्य को करने में किसी प्रकार की तकलीफ तो नहीं है तब स्वामी जी ने कहा कि कोई तकलीफ नहीं है। मैं अपना प्रचार अच्छी प्रकार से कर पा रहा हूँ। तब लार्ड बुक ने कहा कि जब अंग्रेजी राज्य इतना अच्छा है तो आप ईश्वर से अंग्रेजी राज्य के विस्तार करने की प्रार्थना कर दिया करें। तब स्वामी जी ने कहा कि मैं तो नित्य ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूं कि अंग्रेजी राज्य जल्दी से जल्दी नष्ट हो। यह सुनकर लार्ड ब्रुक आवाक् रह गया और उसने इंग्लैण्ड में समाचार भेजा कि स्वामी दयानन्द तो कोई साधारण संन्यासी नहीं हैं, यह तो कोई बागी फकीर है, इसके ऊपर हमें कड़ी नजर रखनी चाहिए। इससे सिद्ध होता है कि स्वामी जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान तो थे ही साथ ही क्रान्तिकारी विचार भी उनमें कूट-कूट कर भरे थे।

जिस संस्था के संस्थापक स्वामी दयानन्द जैसा क्रान्तिकारी हो तो वह संस्था कितनी क्रान्तिकारी होगी। भारत के सन् 1942 के स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज ने जिस ढंग से बढ़-चढ़कर भाग लिया उसका वर्णन पट्टाभि सीतारमैय्या जो कांग्रेस के अध्यक्ष थे, कांग्रेस के इतिहास लिखा कि सन् 1942 की स्वतन्त्रता की लड़ाई में आर्य समाज सबसे आगे था और 85 प्रतिशत आर्य समाजी ही जेलों में थे। वैसे तो अनेकों आर्य समाज क्रान्तिकारी हुए हैं जिन्होंने भारत माता को गुलामी की जंजीरों से निकालने के लिए अपना पूरा जीवन देश के लिए न्यौछावर कर दिया और अनेकों ने फाँसी के फन्दे को चूमा। उनमें भी पाँच आर्य समाजी क्रान्तिकारी मुख्य है जिनका नाम क्रान्तिकारियों की श्रृंखला में बहुत ऊँचे स्थान पर आता है। अलग संक्षिप्त जीवन चरित्र इसी भांति है-

(1) राम प्रसाद बिस्मिलः- रामप्रसाद बिस्मिल एक बड़ा चरित्रवान, बलिष्ठ, परम साहसी व देश के प्रति समर्पित भाव वाला क्रान्तिकारी था। इनका जन्म उत्तर प्रदेश में सन् 1897 में हुआ था। आर्य समाज मन्दिर इनके घर के पास ही था इसलिए वे आर्य समाज में जाने-आने लगे। उनसे सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा जिससे वे पक्के आर्य समाजी हो गये। उनके पिताजी पक्के सनातनी थे, इसलिए ये बिस्मिल का आर्य समाज में जाना पसन्द नहीं करते थे। एक दिन पिता ने कहा कि बिस्मिल! या तो तुम आर्य समाज में जाना छोड़ दो या फिर घर छोड़ दो। बिस्मिल ने घर छोड़ दिया और आर्य समाज में रहने लगे। यह थी बिस्मिल की आर्य समाज के प्रति भक्ति व आस्था। क्रान्तिकारियों में बिस्मिल का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। क्रान्तिकारियों के मुख्य कार्यो में काकोरी काण्ड को प्रमुखता दी जाती है कारण जिस समय क्रान्तिकारियों के पास धन का अभाव था। हथियार खरीदने में तकलीफ हो रही थी, तब काकोरी स्टेशन पर सरकारी खजाने को लूटा गया था। यह काण्ड बिस्मिल की प्रधानता में किया गया था जो अति सफल रहा। इसी काण्ड के कारण बिस्मिल को गोरखपुर जेल में रख गया और इसी जेल में फाँसी दी गई। बिस्मिल का आर्यत्व इसी में झलकता है कि बिस्मिल जेल में रहते हुए नित्य हवन करके ही भोजन करते थे और फाँसी के फन्दे को चूमने से पहले उसने स्तुति प्रार्थनापासना के आठो मन्त्रों का पाठ किया था। इससे बढ़कर आर्य समाजी होने का क्या सबूत हो सकता है।

(2) श्याम जी कृष्ण वर्मा- एक बहुत ही तीव्र बुद्धि के होनहार नवयुवक थे। इनका जन्म 4 अक्टूबर 1857 में हुआ था। इनके माता-पिता का निधन उनकी छोटी अवस्था में हो गया था। ये निर्धन परिवार के होने पर भी एक मेधावी छात्र होने से धनाढ्य लोगों ने इनको अपने पास काम करने के लिए रखा और उनके पढ़ने की व्यवस्था भी की। सन् 1874 में महर्षि दयानन्द वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए मुम्बई आये थे तब वर्माजी ने स्वामीजी के एक व्याख्यान से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने स्वामीजी को अपना गुरु मान लिया और वे आर्य समाज के उपदेशक बन गये। वर्मा जी हिन्दी, संस्कृत के साथ-साथ अंग्रेजी के भी विद्वान थे। मोनियर विलियम के कहने पर महर्षि दयानन्द ने ही वर्मा जी को ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत पढ़ाने के लिए लन्दन भेजा था। स्वामीजी का श्यामजी वर्मा को लन्दन भेजने का उद्देश्य वेद प्रचार करना तथा क्रान्तिकारी भावना को फैलाने का भी था। वर्मा जी ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में रहते हुए एक ''इण्डिया हाऊस'' की स्थापना सन् 1905 में की जिसमें भारतीयों को क्रांन्तिकारी बनने की शिक्षा दी जाती थी और वह क्रान्तिकारी का निवास स्थल बन गया था। भारत के गुप्तचर बन कर वर्मा जी वीर सावरकर को पूरी जिम्मेदारी दे कर स्वयं पेरिस (फ्रांस) 1907 में चले गये। भारत के सभी क्रान्तिकारी नेता लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, एम.ए. आदि इसी इण्डिया हाऊस में ठहरा करते थे और इसी में रह कर मदनलाल धींगरा ने विलियम कर्जन वाइली को मारा था और ऊधम सिंह ने जनरल डायर जिसने जलियांवाले बाग का हत्याकाण्ड करवाया था। उसके मर जाने से उधम सिंह ने जनरल डायर को प्रोत्साहन देने वाले माइकल ओडवायर को मारा था। वर्मा जी सन् 1914 तक पेरिस में रह कर फिर स्विटजरलैण्ड होते हुए जेनेवा चले गये। वहाँ उनकी मृत्यु 31 मई सन् 1930 में हो गई। क्रान्ति की आग सबसे पहले वर्मा जी ने ही लगाई थी इसलिए इनको क्रान्तिकारियों का गुरु भी कहा जाता है।

(3) लाला लाजपत रायः- लाला जी एक पक्के आर्य समाजी थे। उन्होंने ही कहा था कि महर्षि दयानन्द मेरे धर्म के गुरु हैं और आर्य समाज मेरी धर्म की माता है। मैंने आर्य समाज से ही देशभक्ति सीखी है। ऐसे महामानव का जन्म 28 जनवरी 1865 में लुधियाना जिला में जगरांव ग्राम में हुआ। लाला जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक अच्छे ओजस्वी वक्ता, समर्पित समाज सेवी, सिद्ध लेखक, कुशल सम्पादक, कट्टर राष्ट्रवादी शिक्षाशास्त्री एवं निर्भीक क्रान्तिकारी नेता थे। उनके कारनामों को देखकर सभी लोग उन्हें ''पंजाब केसरी'' कहने

लगे। लालाजी अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पास करके लाहौर आ गये। यहाँ पर उन्होंने गवर्मेंट कॉलेज में प्रवेश लिया तथा 1882 में एफ-ए और कानून की परीक्षा भी साथ-साथ ही कर ली। यहाँ पर उनके सहपाठी हंसराज तथा पं. गुरुदत्त थे, उन्हीं के माध्यम से उनका सम्पर्क आर्य समाज से हुआ।

लालाजी वकालत पास करके रोहतक और हिसार में वकालत की, साथ ही राजनीति का कार्य भी करते रहे। वे 1888 में कांग्रेस के अधि वेश में इलाहाबाद गये। इसके बाद वे 1907 में पं. गोपाल कृष्ण गोखले के साथ एक शिष्ट मण्डल के सदस्य के रूप में इंग्लैण्ड गये और वहाँ से अमेरिका चले गये। वहाँ अनेकों क्रान्तिकारियों से सम्पर्क किया। इससे यहाँ 1905 में जब बनारस में कांग्रेस अधिवेशन था, तब ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन पर उनका स्वागत करने का प्रस्ताव आया, तब स्वाभिमानी लालाजी ने इसका डटकर विरोध किया। तभी से क्रांग्रेस में दो दल हो गये। एक गर्म दल जिसके नेता थे लालाजी, तिलक जी व सुरेन्द्रनाथ पाल और नरम दल के नेता थे, गोपाल कृष्ण गोखले व गोविन्द रानाडे। गोविन्द रानाडे भी महर्षि दयानन्द के पक्के शिष्य थे। इन्होंने आर्य समाज की मुम्बई में स्थापना के बाद महर्षि के स्वागत में पूना में बहुत बड़ा जुलूस निकाला था। उससे महर्षि की प्रसिद्ध बहुत बढ़ी। कांग्रेस में हुए दो दलों में गर्म दल का मानना था कि आजादी केवल गिड़गिड़ाने से नहीं मिलेगी, बल्कि उसके लिए बलिदान देना पड़ेगा। नरम दल वाले इसके विरोधी थे, परन्तु कांग्रेस में प्रभाव गरम दल वालों का ही था।

पंजाब के 1907 वाले किसान क्रान्ति में लालाजी तथा अजीत सिंह (जो अमर शहीद भगत सिंह के चाचाजी थे) खुला साथ दिया, जिससे इन दोनों को ब्रह्मा की माण्डले जेल में अलग-अलग बन्दी बनाकर रखा। परन्तु जनता के रोष से उनको छः महीने बाद ही छोड़ दिया गया। जेल में लालाजी कई ग्रन्थों की रचना की माण्डले जेल से आने के बाद भारत में उनका भरपूर स्वागत हुआ और उनकी क्रान्तिकारी गतिविधियाँ और अधिक तीव्रगति से चलने लगी। इसके बाद लालाजी फिर इंग्लैण्ड गये, वहाँ आने का वीजा न मिलने से वहीं से जापान और अमेरिका आदि देशों में जा कर भारत की स्वतन्त्रता के लिए अपना प्रबल प्रयास किया। फिर देश में आकर गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। फिर 1924 में स्वामी श्रद्धानन्द व मालवीय जी के साथ हिन्दू महासभा की स्थापना की और इसका पहला अधिवेशन 1924 में कलकत्ता किया जिसकी अध्यक्षता लालाजी ने की। इसके बाद 8 नवम्बर 1927 में ब्रिटिश प्रधानमन्त्री ने भारत के भावी संविधान पर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए एक आयोग का गठन हुआ जिसके अध्यक्ष जॉन साइमन थे। इस आयोग में कोई भी भारतीय न होने से इस आयोग का भारत में विरोध हुआ और यह साईमन आयोग 30 अक्टूबर 1928 को लाहौर पहुँचा। इसका विरोध करने के लिए लालाजी ने एक जुलूस निकाला जिसमें ''साइमन गो बैक'' के गगन चुम्बी नारे लगाए गये। सरकार ने 144वीं धारा लगा दी फिर भी जुलूस आगे बढ़ता गया। इस शान्तिपूर्ण ढंग से विरोध प्रदर्शन करते हुए इस जुलूस पर सांडर्स ने क्रूरता से लाठी चलवा दी और लाला जी को लाठियों से इतना पीटा कि वे बुरी तरह घायल हो गये, तब लालाजी ने सिंह गरजना करते हुए कहा कि मेरे सीने पर लगी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत में कील का काम करेगी और लालाजी का स्वर्गवास 17 नवम्बर 1928 को हो गया। लालाजी की मृत्यु का बदला सरदार भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव ने ''सांडर्स'' को गोली मार कर लिया।

(4) भाई परमानन्दः- भाई परमानन्द का जन्म 4 नवम्बर 1876 में करिवाल (पंजाब) में हुआ। ये अमर बलिदानी भाई बालमुकुन्द के चचेरे भाई थे जिनको लार्ड हार्डिग के जुलूस पर बम फेंकने के केस में फांसी की सजी मिली थी। उस समय आर्य समाज का बड़ा जोर था। ये सत्यार्थ प्रकाश तथा पं. लेखराम के लेखों को पढ़कर आर्य समाज के उपदेशक बन गए थे इनमें वैदिक मिशनरी के भाव कूट-कूट कर भरे थे। उन्होंने 1902 में पंजाब विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा पास की, फिर वे वेद-प्रचार के लिए 1905 में अफ्रीका चले गये। प्रचार करते-करते वे जोहान्सबर्ग पहुंचे तो वहां महात्मा गांधी भी उनसे मिलने आये। उसी समय लाला लाजपत राय भी क्रान्तिकारियों में स्वतन्त्रता के भाव जगाने के लिए लन्दन आये हुए थे। लालाजी ने भाईजी को लन्दन बुला लिया और वहाँ ''इण्डिया हाउस'' में वे, लाला हरदयार और वीर सावरकर से मिले। अब भाई जी वेद प्रचार के साथ-साथ क्रान्तिकारी भावना फैलाने का काम भी बहुत जोर-शोर से करने लगे।

अगस्त 1914 में प्रथम विश्वयुद्ध आरम्भ हो गया था। भाई परमानन्द जी तथा गदर पार्टी के क्रान्तिकारियों द्वारा एक बैठक बुलाई गई जिसमें करतार सिंह सराभा, भाई परमानन्द, रासबिहारी बोस, शचीन्द्रनाथ सन्याल व गणेश पिंगले मुख्य थे। इन्होंने मिलकर एक योजना बनाई कि सन् 1857 की तरह ही हमें देश में विद्रोह करके देश को स्वतन्त्र करवाना चाहिए। इसके लिए 21 फरवरी 1914 का समय भी निश्चि कर दिया। इन क्रान्तिकारियों ने आगरा, कानपुर, इलाहाबाद, बनारस, लखनऊ, लाहौर, फिरोजपुर आदि छावनियों में जाकर सैनिकों से सम्पर्क भी कर लिया। बगावत करने की पूरी तैयारी हो गई थी परन्तु गदर पार्टी का ही एक क्रान्तिकारी कृपाल सिंह ने गद्दारी की और पूरा भेद पुलिस को दे दिया जिससे योजना का भंडाफोड़ हो गया और चारों तरफ पुलिस का दमन चक्र चालू हो गया। इस योजना के तहत 61 अभियुक्तों पर अभियोग चला जिनमें 15 नवम्बर 1915 को भाई परमानन्द समेत 18 क्रांन्तिकारियों को फाँसी की सजा सुनाई गई। पर किसी कारण से भाई जी की फांसी की सजा को कालापानी की कारावास में बदल दिया गया और 20 अप्रैल 1920 को भाई जी को रिहा कर दिया गया। तत्पश्चात् भाई जी लौहार में रहने लगे। हिन्दू महासभा से जुड़े जिससे हिन्दुओं का पक्ष कुछ मजबूत बनने लगा। सन् 1934 में भाई जी हिन्दू महासभा के अध्यक्ष भी चुने गये। वीर सावरकर को 1937 में रत्नागिरी जेल से मुक्त कर दिया गया, तब 1937 में वीर सावरकर को हिन्दू महासभा का अध्यक्ष बनाया गया, तब से इस संस्था में जान आ गई। भाई जी यद्यपि हिन्दू मुस्लिम एकता के पक्षधर थे परन्तु पाकिस्तान बनाने का सदा विरोध किया। परन्तु पाकिस्तान बन जाने पर इनको बड़ा आघात पहुँचा और 8 दिसम्बर 1947 को वे सदा-सदा के लिए इस संसार को छोड़कर चले गये। - कलकत्ता, मो. 9830135794

टंकारा में कमरों के लिए
सहयोग राशि देकर नाम पट लगवाये।
अधिक जानकारी के लिए
सम्पर्क करें- अजय, मो.9810035658

बृहत्तर भारत कर्तारम् श्री कृष्णं वन्दामहे

❐ स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

पांच सहस्त्र वर्षो से भी पुरानी बात है। द्वापर युग का अन्त और कलियुग का आरम्भ होने वाला था। मेगस्थनीज के यात्रा के विवरणों के आधार पर आज 2070 वि., 2013 ई. में 5085 वर्षो की पूर्व की बात है। भारतीय इतिहास की गणना में भगवान् श्रीकृष्ण का काल 5152 वर्ष के लगभग प्राचीन है। श्रीकृष्ण युधिष्ठिर के राज्याभिषेक के पश्चात, महाभारत युद्ध के पश्चात् 36 वर्ष जीवित रहे थे। भारतवर्ष के इतिहास की दृष्टि से यह द्वापर और कलियुग का सन्धिकाल ऐसा कालखण्ड है जब भारत वसुन्धरा पर प्रतिकूलता और विपत्ति की काली घटाएँ घुमड़-घुमड़ कर घिरती चली आ रही थीं। कहने को तो जरासन्ध मगध में सम्राट था और अन्य सब माण्डलिक राजा थे। किन्तु वास्तव में सम्पूर्ण भारत देश खण्ड-विखण्ड होकर राष्ट्रीय दृष्टि से आत्मघाती मार्ग पर बढ़ता चला जा रहा था। सम्राट जरासन्ध इतना अन्यायी था कि उसने 86 आंचलिक राजाओं को गिरिव्रज के कारागार में बन्दी बना रखा था और एक सौ की संख्या पूरी होने पर उन्हें महादेव की बलि चढ़ा देने की योजना बना रहा था।

इधर हस्तिनापुर में भीष्म जैसे अजेय-बाल-ब्रह्मचारी और द्रोण जैसे शस्त्रास्त्रों के दिग्गज आचार्य थे, किन्तु राष्ट्रीयता की दृष्टि से सब बेकार। अन्धे धृतराष्ट्र की राज्य लिप्सा, कौरव-पाण्डवों का कुलघाती संघर्ष इतना भारी पड़ रहा था कि इन सबके न कोई उच्च राष्ट्रीय आदर्श, न राष्ट्रनीति, न अन्याय का विरोध, कुछ भी न रह गया था। इनकी नाक के नीचे ही इन्हीं के सम्बन्धी, कुन्ती के मातृ पक्ष में, कंस मथुरा में अपने पिता उग्रसेन से यदुवंशियों का राज्य छीनकर उनको कारागार में बन्दी बनाकर स्वयं राजा बन बैठा था और इनके नजदीकी सम्बन्धी हस्तिनापुर वालों के भीष्म, द्रोण, धृतराष्ट्र के कान में जूँ तक न रेंगी। यह था नैतिकता और राष्ट्रीयता के पतन का एक ज्वलंत उदाहरण। कहने को यदुवंशियों के 18 कुल थे और 18 हजार यथुवंशी थे किन्तु सब कंस से डरते थे क्योंकि कंस सम्राट जरासन्ध का दामाद था। जरासन्ध की दो पुत्रियाँ ''अस्ति'' और ''प्राप्ति'' कंस को ब्याही थी। अत: कंस को अपने श्वसुर जरासन्ध का संरक्षण प्राप्त था।

सम्पूर्ण भारत का राष्ट्रीय परिदृश्य आंचलिक राज्यों में परस्पर संघर्षरत था। पश्चिम में मद्र (ईरान) में शल्य, गांधार (अफगानिस्तान) में शकुनी, सौवीर सिन्धु में जयद्रथ, हस्तिनापुर में कौरव-पाण्डवों का गृह युद्ध, मथुरा में कंस, इधर पूर्व प्राग्ज्योतिषपुर में नरकासुर, भगदत्त, मगध में जरासन्ध, सम्पूर्ण देश अन्याय, अत्याचार, पारस्परिक विद्रोह-विग्रह में कराह रहा था। धर्म की ग्लानि हो रही थी और अधर्म बढ़ता जा रहा था। इसी समय भारत वसुन्धरा का राष्ट्रीय उद्धार करने के लिए श्रीकृष्ण चन्द्रोदय हुआ। लोकनायक श्रीकृष्ण ने अपने जीवन के उद्देश्य की घोषणा कर दी-

''परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे।।'' गीता. 4-7

अर्थात् श्रीकृष्ण के जन्म और जीवन का उद्देश्य अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना तथा दुष्टों का दमन और सज्जनों, साधु-सन्तों की रक्षा करना था। भाद्र पद की कृष्ण अष्टमी को आनन्दकन्द देवकीनन्दन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। श्रीकृष्ण और उनके बड़े भाई बलराम धीरे-धीरे बड़े होने लगे और मल्लयुद्ध में प्रवीण होने लगे। यदुवंशी 18 कुलों में 18 हजार थे और वे कंस को हटाकर उग्रसेन को यादव संघ का राजा बनाना चाहते थे, किन्तु सम्राट जरासन्ध के संरक्षण में रहने के कारण जरासन्ध के जामाता कंस को युद्ध में हराना असम्भव था। अत: श्रीकृष्ण ने द्वन्द्व युद्ध में कंस को मार डालने की योजना बनायी। श्रीकृष्ण और बलराम की मल्ल विद्या का यश चारों ओर फैलने लगा। कंस श्रीकृष्ण और बलराम को मल्ल युद्ध में मरवा डालना चाहता था। कंस के दो दरबारी मल्ल योद्धा थे मुष्टिक और चारूझा। कंस ने इन्हें नियुक्त किया कि वे दोनों मल्लयुद्ध में कृष्ण और बलराम को मार डालें। कंस के दरबार में मल्लयुद्ध का आयोजन हुआ। कृष्ण ने चारूण और बलराम ने मुष्टिक को पराजित करके जान से मार डाला। यह देखकर कंस घबरा गया और अखाड़े से भागने लगा। श्रीकृष्ण ने कंस को धर-दबोचा और कंस के भाई सुनामा को बलराम ने आसानी से मार डाला। इधर सम्राट जरासन्ध की दोनों पुत्रियां विधवा हो गयी और जरासन्ध का क्रोध यदुवंशियों पर बहुत बढ़ गया और वह मथुरा में यादव संघ को नष्ट करने के लिए आक्रमण करने लगा। बाधित होकर यदुवंशी मथुरा छोड़कर पश्चिमी समुद्र के किनारे द्वारका में बस गये। श्रीकृष्ण और बलराम के सामने अस्त्र-शस्त्रों के संग्रह का प्रश्न था। दोनों ही अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा प्राप्त करने के लिए अवन्तिपुरी में सान्दीपनि ऋषि के गुरुकुल में गये।

''अहोरात्रैश्वतुः षष्ट्या तदभ्दुतमभूद् द्विजः।
अस्त्रग्रामशेषञ्च प्रोक्तमात्रमवाप्य तौ।।'' वि. पु.

भावार्थ यह हुआ कि दोनों भाई कृष्ण ओर बलराम अवन्तिकापुरी में सान्दीपानि आचार्य के पास अस्त्र-शस्त्र सीखने, प्राप्त करने के उद्देश्य से गये। वहां वे 64 रात्रिदिन परिश्रम करके अद्भुत रूप से सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्रों को प्राप्त करने में सफल हुए।

भारतवर्ष का सम्राट जरासंध था और बिना जरासन्ध का वध किये बृहत्तर भारत संघ की स्थापना नहीं हो सकती थी। जरासन्ध के साथ ही दुष्ट अन्यायी राजाओं का एक धड़ा बन गया था। मथुरा में कंस, मगध में जरासंध, असम में नरकासुर, हस्तिनापुर में दुर्योधन, सिन्ध में जयद्रथ, मद्र (ईरान) में शिशुपाल सभी आंचलिक राजा थे। इन्द्रप्रस्थ में युधिष्ठिर को माध्यम बनाकर श्रीकृष्ण बृहत्तर भारत, विशाल भारत को एक संघ राज्य बनाने का सपना देख रहे थे। इस भारत महासंघ के निर्माण में सबसे बड़ी बाधा सम्राट जरासन्ध ही था। उसको सेना की लड़ाई में पराजित करना असम्भव था। श्रीकृष्ण ने कंस को द्वन्द्व युद्ध में मारा था। यह श्रीकृष्ण की सुपरीक्षित नीति थी। श्रीकृष्ण ने भीम और अर्जुन को साथ लेकर जरासन्ध की राजधानी गिरिब्रज की यात्रा की। तीनों स्नातक के वेश में वहां जा पहुँचे। श्रीकृष्ण ने परिचय दिया कि हम तीनों स्नातक हैं और इन दोनों का मौनव्रत हैं। आज आधी रात ये मौन व्रत तोड़ेंगे, उसी समय हम आपसे वार्तालाप करेंगे। सम्राट जरासन्ध ने अतिथियों को यज्ञशाला

में ठहरा दिया। रात बारह बजे जब जरासन्ध उनसे मिलने आया तो श्रीकृष्ण ने तीनों का परिचय दिया और जरासन्ध को द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारा। जरासन्ध ने भीम से मल्ल युद्ध स्वीकार कर लिया। वह कृष्ण और अर्जुन को अपनी जोड़ में हीन समझता था। अगले दिन कार्तिक प्रतिपदा को दानों का मल्ल युद्ध आरम्भ हुआ। तेरह दिन लगातार कुश्ती होती रही। चतुर्दशी को जरासन्ध कुछ शिथिल होने लगा। कृष्ण ने भीम को प्रोत्साहित किया और भीम ने जरासन्ध को पटककर उसकी टांगे फाड़ दी। जरासन्ध मारा गया। श्री कृष्ण की नीतिमत्ता थी कि बिना किसी रक्तपात के मगध का साम्राज्य सेना कोष सब युधिष्ठिर के अधीन हो गये। कृष्ण ने बन्दी 86 राजाओं को स्वतन्त्र कर दिया और मगध के सिंहासन पर जरासन्ध के पुत्र सहदेव का राज्याभिषेक कर दिया और इस तरह मगध भी कृष्ण-युधिष्ठिर के अनुकूल हो गया।

महाभारत युद्ध के सफल नेता श्री कृष्ण- महाभारत का युद्ध कहने को तो कौरव-पाण्डवों का गृह युद्ध था किन्तु वास्तव में यह भारतखण्ड के भाग्य का निर्णायक युद्ध था। कौरव का पक्ष भीष्म, द्रोण, कर्ण आदि के कारण बड़ा प्रबल दुर्जेय था। श्रीकृष्ण को सम्पूर्ण परिदृश्य से हटा देने पर पाण्डव पक्ष अन्धकार में डूब जाता है। श्रीकृष्ण न होते तो भीष्म की शरशय्या, द्रोण-जयद्रथ-कर्ण-दुर्योधन का वध का क्या रूप बनता? श्रीकृष्ण ने पाण्डवों की रक्षा की, शत्रुओं का वध करवाया। युधिष्ठिर सिंहासनारूढ़ हुए। अश्वमेध यज्ञ हुआ। सैकड़ों राज घराने एक सम्राट के अन्दर आ गये। खण्ड-खण्ड विभक्त भारत महाभारत बना। यह सब श्रीकृष्ण के नेतृत्व के कारण हुआ। काबुल गान्धर से असम तक सम्पूर्ण भारत एक राष्ट्र महाभारत बन गया, यह कृष्ण की ही सूझ बूझ थी।

राजनीतिक दृष्टि से, राजनीति विज्ञान (Political Science) की दृष्टि से, श्रीकृष्ण का महाभारत निर्माण या युधिष्ठिर का अश्वमेघ यज्ञ केवल सम्राट बनने की घोषणा मात्र न था। श्रीकृष्ण ने एक सम्राट के झण्डे के नीचे एक संधशासन (Federal State) की स्थापना कर डाली थी। श्रीकृष्ण स्वयं राजा न थे। किन्तु राजा-निर्माता अवश्य थे। उग्रसेन को कंस वध के पश्चात राजा इन्होंने बनाया था। जरासन्ध की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र सहदेव को मगध का राजा इन्होंने बनाया था। युधिष्ठिर का राज भी तो इन्हीं का निर्माण था। युधिष्ठिर ने अश्वमेघ यज्ञ किया, वे सम्राट भी हुए किन्तु श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर के सम्राट को संघीय स्वरूप दिया। युधिष्ठिर के साम्राज्य का प्रत्येक राज्य अपनी आन्तरिक राजनीति, परम्परा व्यवस्था, आर्थिक विकास, शिक्षा सभ्यता रहन-सहन में पूर्ण स्वतन्त्र था। यह प्रत्येक राज्य की आंचलित स्वयत्तता के साथ सम्पूर्ण भारतवर्ष को एक राष्ट्र में आबद्ध कर महाभारत बनाने की योजना श्रीकृष्ण का राजनीतिक उद्देश्य था। यह उनका महाभारत बनाने का नेतृत्व था।

श्रीकृष्ण चरित्र की अल्पज्ञात घटना- सामान्य रूप में श्री कृष्ण वेद, वेदांग, विज्ञान आदि के विद्वान अप्रतिम योद्धा थे। श्रीकृष्ण अद्भुत, सदाचारी, ब्रह्मचारी, तपस्वी महापुरुष थे। अपने पत्र प्रद्युम्न के जन्म के सम्बन्ध में एक का उद्घाटन श्रीकृष्ण ने स्वयं ही सौप्तिक पर्व में किया है-

''ब्रह्मचर्य महद् घोरं चीर्त्वा द्वाद्वश वार्षिकम्।
हिमवत् पार्श्वमभ्येत्य यो मया तपसार्जितः॥
समान व्रतचारिण्यां रूक्मिण्यां योऽन्वजायत।
सनतकुमार तेजस्वी प्रद्युम्नो नाम मे सुतः॥''

अ. 12/30-31

इन श्लोकों का भाव यह है कि श्री कृष्ण ने अपनी पत्नी रूक्मिणी के साथ हिमालय की तराई में 12 वर्षो का महान् घोर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके तपस्या की और रूक्मिणी ने भी समान रूप से व्रत के अनुष्ठान में साथ तपस्या की। फिर दोनों ने सनत् कुमार जैसा तेजस्वी प्रद्युम्न नामक पुत्र उत्पन्न किया।

ऐसे चरित्रवान् योगेश्वर श्रीकृष्ण के चरित्र में रासलीला का प्रसंग पुराणयुग के रसिक कथाकारों की रसिक कल्पना मात्र है। श्रीकृष्ण कायोगेश्वर योद्धा चक्र सुदर्शनधारी आदि स्वरूप का निदर्शन महाभारत में मिलता है। श्रीकृष्ण के जीवन से अधिक उनके गीता गायक स्वरूप ने संसार को प्रभावित किया हैं श्रीमद्भगवत् गीता में श्रीकृष्ण के योग, ज्ञान, कर्म और भक्ति के उपदेशों का बहुत सुन्दर वर्णन है। श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व का योगेश्वर स्वरूप बड़ा मनोमोहक है। संजय ने गीता के अन्तिम श्लोक में बहुत सुन्दर कहा है-

'' यत्र योगेश्वरः कृष्णों यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥'' गीता-18-78

जहां, जिस पक्ष में योगेश्वर श्रीकृष्ण हैं, जिस पक्ष में धनुर्धर अर्जुन हैं, उसी पक्ष में श्री, विजय, भूति और ध्रवनीति है, यही मेरी सम्मति है। जन्माष्टमी पर हम योगेश्वर श्रीकृष्ण की वन्दना करते हैं।

- ईशावास्यम्, पी-30, कालिन्दी, कोलकाता-700089

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

महर्षि के स्वप्नों का आर्यावर्त कब और कैसे बनेगा?

❒ डॉ. प्रशांत वेदालंकार

अंग्रेजों का भारत को जल्दी आजादी न देने का एक तर्क यह था कि अभी भारतीय इतने योग्य नहीं है कि वे शासन कर सकें, प्राप्त आजादी को सम्भाल कर रख सकें। पर भारत में ऐसे लोगों की कमी नहीं थी जो महर्षि दयानन्द के इस कथन से कि बुरे से बुरा स्वदेशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है-प्रभावित थे और वे विदेशी शासन को समाप्त करने पर तुले थे। स्वतन्त्रता संग्राम में देश को स्वतन्त्र कराने वाले मतवालों में 80 प्रतिशत आर्यसमाजी ही थे। इनका विचार था कि महर्षि दयानन्द ने स्वधर्म, स्वभाषा, स्वदेशी तथा स्वदेशोन्नति के जो सूत्र बताए हैं, हम अपने देश का उनके आधार पर निर्माण कर लेंगे। देश स्वतन्त्र हो गया, पर देश की उन्नति न हो सकी। स्वतन्त्रता के 48 वर्षो के बाद भी हम 'बौने' हैं और किसी भी क्षेत्र में स्वालम्बी नहीं हो सके। उसका एक बड़ा कारण यह है कि जिन लोगों को देश की उन्नति का भार सौंपा गया उन्होंने महर्षि दयानन्द को समझने की कभी कोशिश नहीं की। जिस कारण देश की उन्नति के लिए जो नीतियां बनायी गयीं, वही देश के लिए घातक सिद्ध हुई।

धर्मरहित राज्य- महर्षि दयानन्द के काल में भी हमारे देश में अनेक सम्प्रदाय थे। महर्षि दयानन्द का प्रयत्न था कि प्रत्येक सम्प्रदाय की सर्वमान्य बातों को स्वीकार कर शेष का विरोध किया जाए। सभी सम्प्रदाय सत्य का अवलम्ब लेकर एक ही निष्कर्ष पर पहुंचे। पर हमारे संविधान में धर्मनिरपेक्ष्ज्ञता अथवा सम्प्रदाय निरपेक्षता को देश अथवा सम्प्रदाय निरपेक्षता को देश की उन्नति के लिए आवश्यक समझा गया, जिसके दो अर्थ स्पष्ट थे- (1) नयी पीढ़ी की धर्म के प्रति अनास्था तथा (2) तुष्टीकरण। धर्मनिरपेक्ष नीति के ही कारण भारतके गौरवपूर्ण इतिहास, संस्कृति तथा सभ्यता की उपेक्षा की गयी। यदि किसी ने भारतीय सांस्कृतिक गौरवचिन्हों की सुरक्षा की बात उठायी तो उसे साम्प्रदायिक कहा गया। उसी नीति की परिणति अब संसद में एक नये विधेयक के रूप में हो रही है, जिसमें राजनीति से धर्म को समाप्त करने का प्रावधान होगा। महर्षि दयानन्द का स्वप्न धर्मयुक्त राज्य था, हमारी सरकार तथा अनेक विरोधी दल ऐसे राज्य की कल्पना कर रहे हैं, जहां राजनीति धर्म के बिना चलेगी। यह विधेयक लाते हुए वे धर्म के विस्तृत अर्थ की भी उपेक्षा कर रहे हैं। उस विधेयक की यपरेखा हमारे सामने नहीं है, पर उसका दुष्परिणाम 'धर्मनिरपेक्ष' नीति से भी अधिक घातक होगा, यह निश्चित है। विडम्बना यह है कि एक ओर प्रधानमन्त्री उक्त विधेयक को लाने की बात कहते हैं, पर साथ ही अजमेर दरगाह पर जाकर चादर भी चढ़ाते हैं।

आरक्षण: विघटन का कारण- देश में मत बटोरने की राजनीति चल रही है। अल्पसंख्यकों के मतों को बटोरने का धंधा अनेक दलों ने किया है। बहुसंख्यक समाज प्रताड़ित हो रहा है। उसके हितों का कोई रक्षक नहीं है। कोई उनकी आवाज उठाता है, तो उस पर साम्प्रदायिक होने का आरोप लगता है। कुछ नेताओं ने मुसलमानों के लिए आरक्षण की आवाज उठाकर न केवल तुष्टीकरण की नीति का घृणास्पद निदर्शन प्रस्तुत किया है वरन देश में अलगाव को बढ़ाने का उपक्रम भी किया है।

जब डॉ. अम्बेडकर को भारत का संविधान बनाने का कार्य सौंपा गया तो देश के नागरिकों के मन में यह आशा जगी कि देश में छुआछूत की समस्या दूर होगी। महात्मा गांधी के सपने पूरे होगें सब प्रेम से रह सकेंगे, पर उन्हें आरक्षण की वैशाखी देकर हमेशा-हमेशा के लिए विकलांग बना दिया गया। उनकी अपनी जाति के नेता ही उसकी विकलांगता का लाभ उठा रहे हैं। मंडल आयोग बना दिया जिसे 10 वर्षो के बाद अमली जामा पहनाने के बाद सारे देश में जातीय ऊंची जातियों के प्रति विद्वेष की आग पैदा कर दी। जातीय संघर्ष का प्रश्न आज भी उसी प्रकार हमारे सामने मुंह बाए खड़ा है। कांग्रेस सरकार अभी इस विषय में कोई निर्णय नहीं ले पा रही। सबको उन्नति का समान अवसर दिये बिना तथा शिक्षित किए बिना अनुसूचित जातियों, जनजातियों व पिछड़ी जातियों को आरक्षण देने का ढिंढोरा पीटना केवल मत बटोरने का घिनौना षंडयंत्र है।

एकमात्र उपाय: सबको समान शिक्षा- महर्षि दयानन्द ने कहा था- यह राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से अपने लड़के ओर लड़कियों को घर में न रखकर किसी पाठशाला में अवश्य भेजें, जो न भेंजे वह दण्डनीय हों। यदि इस नियम का कठोरतापूर्वक पालन किया जाता तो आज स्वतन्त्र भारत का प्रत्येक बालक शिक्षित होता। लेकिन इस नियम का पालन न होने से अभी भी देश में 65 प्रतिशत लोग, अशिक्षित हैं। देश के नेताओं को चिल्ला-चिल्ला कर कहने की इच्छा होते हैं-यदि तुम में देशोन्नति की रत्ती भर भी इच्छा है तो पहला काम सबको शिक्षित करने का करो।

देश में प्रतिभा पलायन की समस्या है। लाखों रूपये खर्च करके हम चिकित्सक, अभियन्ता अथवा वैज्ञानिक तैयार करते हैं और वह विदेशों की सेवा करने के लिए पहुंच जाता है। इसका अपने देश के लिए कोई उपयोग नहीं होता। जो शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं उन्हें चरित्र व देशभक्ति की कोई शिक्षा नहीं दी जाती। वे अपने इतिहास व परम्पराओं से भी अनभिज्ञ रहते हैं।

राष्ट्रभाषा का प्रश्न- बिना भारतीय भाषाओं को माध्यम बनाए शिक्षा, न्याय व प्रशासन आदि देशोन्नति की कल्पना करना मूर्खो के स्वर्ग में जीना है। हमने कभी कल्पना नहीं की थी स्वतन्त्र देश में भी विदेशी भाषा शिक्षा तथा प्रशासन का माध्यम होगी। जो भाषा 200 वर्षो तक हमारे ऊपर शासन करती रही, उसके जानकर आज भी 4 प्रतिशत से अधिक नहीं है 4 प्रतिशत की भाषा 16 प्रतिशत भारतीय भाषाओं के जानकार लोगों पर शासन कर रही है। आरक्षण के पक्षधरों को यह आवाज उठानी चाहिए कि देश में जिस भाषा के जितने जानकार हैं शासन में उनके उतने स्थान आरक्षित हों। अपनी भाषा के अभाव में देश का छात्र अपनी पढ़ाई ठीक प्रकार से नहीं कर पा रहा है। जो कर रहा है वह केवल विदेशी ज्ञान-विज्ञान को अपने मस्तिष्क में ठूंस लेता है जिसमें मौलिक चिन्तन नहीं होता जिस कारण हम अपना विज्ञान विकसित नहीं कर पा रहे। हम आज तक अपनी कृषि विज्ञान व चिकित्सा विज्ञन विकसित नहीं कर पाए। राजनीति व समाजशास्त्र भी हमारा उधार लिया हुआ है। जबकि हमारा प्राचीन साहित्य व इतिहास इस बात का प्रमाण है कि हम कभी इन सबमें विश्व को दिशा निर्देश करते थे।

समाजवाद का ढिंढोरा- समाजवाद की ओर अपना रूझान देश के प्रथम प्रधानमन्त्री स्व. पं. नेहरू ने ही प्रस्तुत कर दिया था। स्व. श्रीमती इन्दिरा गांधी ने गरीबी हटाओ का नारा दिया, संविधान का एक

विशेषण समाजवादी रखा। लोगों ने सोचा कि अब देश से गरीबी और भुखमरी समाप्त हो जाएगी, पर आज भी 50 प्रतिशत के लगभग लोग गरीबी की रेखा के नीचे रह रहे हैं। उन्हें दो समय का भोजन भी नहीं मिलता। देश में 50 प्रतिशत से अधिक लोग काले धन, तस्करी और भ्रष्टाचार के शिकार है, जिससे सारी अर्थव्यवस्था ठप हो गयी हैं इस समय देश पर अरबों रूपयों का ऋण है।

अभी बोफोर्स कांड का कलंक मिटा नहीं था कि हर्षद मेहता कांड हो गया। इस प्रतिभूति घोटाले में प्रधानमन्त्री तक को शामिल कर लिया गया है। एक न्यायाधीश पर भ्रष्टाचार का आरोप है।

लचर अर्थनीति- महर्षि दयानन्द की नीति 'स्वेदेशी' और 'स्वावलम्बन' की थी। इसके लिए अपने साधनों व स्रोतों के अनुभव लघु व कुटीर उद्योग पर बल देना देश की एक बड़ी आवश्यकता है, पर भारत सरकार इस बात को नहीं समझ पा रही है।

अब हमारी सरकार का विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को निर्मंत्रित करके अपने उद्योगों और अपनी अर्थव्यवस्था को पंगु करने का निर्णय देश को आर्थिक दृष्टि से परतंत्र बना रहा हैं हमारा देश आर्थिक दृष्टि से परतन्त्र हो रहा है। स्वदेशी और स्वावलम्बन केवल आदर्श और जीवन मूल्य ही नहीं वरन ये हमारी नीतियां हैं, जिनसे देश आत्मनिर्भर बनता है। अपने पैरों पर खड़ा होने की क्षमता रख सकता है।

देश की इन्हीं आर्थिक कुरीतियों के कारण ही देश में निरन्तर महंगाई बढ़ रही है। महंगाई के कारण भ्रष्टाचार, घूस और चोरबाजारी जैसे दुर्गुण उत्पन्न हुए हैं। देश के युवक बेकारी का दंड भोग रहे हैं। युवाशक्ति जो देश का कायापलट कर सकती है, वह कुंठित होकर देश को बर्बाद कर रही है। इन सब कारणों से देश का चरित्र निरन्तर गिर रहा है। ये सब प्रश्न हमारी चिन्ता का विषय है। हम आर्थिक कारणों से युवाशक्ति को भटकाव के मार्ग पर नहीं पटक सकते। हमें उनका उपयोग करना होगा तभी हम देश के चरित्र की रक्षा कर सकते हैं।

हमारा देश ग्रामप्रधान देश है पर ग्रामोन्नति की हमारी सारी योजनाएं असफल रही हैं। पंचायत प्रथा पर कुठाराघात तथा सरकारी अधिकारियों का गांवों से कोई लेना-देना नहीं है-का भ्रष्टाचार व अनावश्यक दखल के कारण गांव आज भी अविकसित है। गांव के विकास से ही देश का विकास सम्भव है।

देश विघटन के कगार पर: देश में बढ़ती बेकारी तथा ग्रामीण युवकों की उपेक्षा के ही कारण देश में आतंकवाद भी बढ़ा हुआ है। इन 53 वर्षो में यदि कोई चीज बढ़ी है तो वह आतंकवाद, विघटन तथा कानून और व्यवस्था की दुरवस्था है। आज यहां का मनुष्य अपने को असुरक्षित अनुभव करता है। स्वतन्त्र देश के बहुत से भू-भाग पर चीन, पाकिस्तान तथा बांग्लादेश का आधिपत्न है। कश्मीर घाटी आतंकवादियों के आधिपत्य में है। वहां के सारे हिन्दुओं को भगा दिया गया है और धीरे-धीरे पंजाब में भी वही स्थिति हो रही है। देश में न जाने कितने घुसपैठिए बलपूर्वक घुस आए हैं। लगता है धीरे-धीरे इन घुसपैठियों का हमारे शासन में हाथ हो जाएगा।

इस अणु युग में हम बिना अणुशक्ति के रह रहे हैं। चक्रवर्ती साम्राज्यों का इतिहास हमारा है पर अब महाशक्तियां अथवा वे छोटे देश भी जिन्होंने अणुशक्ति का निर्माण कर लिया है अब तक हम पर धौंस जमाते रहे हैं और अभी भी जमा रहे हैं। पड़ौसी राष्ट्रों से हमें हमेशा खतरा बना रहता है। आज यह सत्य सर्वविदित है कि हमारे देश में आतंकवादी प्रवृत्तियां पाकिस्तान करा रहा है, छोटा सा पाकिस्तान विशाल भारत को परेशान करे, इससे अधिक दुर्बलता और लज्जा की दूसरी क्या बात हो सकती है? हमें अपने देश को शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनाने का संकल्प और उसके लिए अपनी नीतियों में परिवर्तन करना होगा।

हमने अपनी शासन व्यवस्था व उन्नति के लिए प्रजातन्त्र के मार्ग का अवलम्ब किया है। पर हमारे प्रजातन्त्र में प्रजा की ही घोर उपेक्षा होती है। समाचार पत्र तथा अन्य प्रचार के साधन पूंजीपतियों व सरकारी संसाधनों के आधिपत्य में है। न्याय व्यवस्था इतनी महंगी व अनावपश्यक कानूनी पेचीदगियों में फंसी है कि एक बार न्यायालय का दरवाजा खटखटाने वाला व्यक्ति मृत्यु के बाद ही उससे मुक्ति प्राप्त कर पाता है। विधान सभाओं व संसद् का स्तर गिर गया है। विधायक तथा सांसद यह भूल जाते हैं कि जनता उन्हें विधान सभा तथा संसद् को ठप करने के लिए नहीं, अपितु अपनी बात तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत करने के लिए भेजती है।

वस्तुतः राष्ट्रीयता की तीव्रभावना अपने संसाधनों व शक्ति से अपने देश की उन्नति की योजना, ऊंचा चरित्र अपनी संस्कृति, अपनी विचारधारा तथा अपने इतिहास से सभी समस्याओं को हल करने के संकल्प से हम आगे बढ़ सकते हैं। राष्ट्र के सम्बन्ध में अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति का और कोई उपाय नहीं है, ऐसी इच्छा होती है कि एक बार महर्षि दयानन्द फिर इस भूमि पर आ जाएं और देश को ठीक दिशा निर्देश दे जाएं। अन्यथा हम कब स्वतन्त्र होंगे? यह प्रश्न अनुत्तरित रह जाएगा।

– लेख आज से लगभग 25 वर्ष पूर्व लिखा गया था लेकिन आज भी प्रासंगिक है-सं.

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 19 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)**

-प्रबन्धक

સ્વામી દયાનન્દ (એક રેખાચિત્ર)

વ્યાખ્યાતા:- સાક્ષર શ્રી રમણલાલ વસંતલાલ દેસાઈ

ગુજરાતના પ્રસિદ્ધ સાક્ષર સ્વ. શ્રી રમણલાલ વ. દેસાઈએ ગુરુકુલ સૂપાના દીક્ષાંત પ્રસંગે આપેલ વ્યાખ્યાન ઋષિવર માટે કોઈપણ ભાષામાં કહેલ શ્રેષ્ઠ શાબ્દિક ચિત્ર છે. લાંબા સમયથી અપ્રાપ્ય હતું. ગુજરાતી ઋષિ ભક્તોની સેવામાં ફરી એકવાર રજુ કરું છું.

સમ્પાદક:- રામેન્દુ ૯૩૨૭૦૨૬૯૭૦

વૈદિક સંસ્કારોને પ્રત્યક્ષ નિહાળતી વખતે એક ભવ્ય યુગપુરુષનું સ્મરણ થાય એ સ્વાભાવિક છે. ઈશ્વરની મૂર્તિ ઘડી શકાય એમ નથી જ; એટલે એની મૂર્તિપૂજા શકય નથી. આર્યધર્મના મતમતાંતરો અને ખ્રિસ્તી કેથોલીકો ઈશ્વર સન્નિદ્ધિ માટે મૂર્તિપૂજાની જે કલામય ક્રિયા કરે છે એ ઈશ્વરના મહાન સાક્ષાત્કારની અશક્તિ દર્શાવતી માનવ મર્યાદા છે, પરંતુ માનવમૂર્તિ ઘડી શકાય છે, માનવીની છબી ચિતરી શકાય છે, અને તેની પૂજા નહીં તો તેનું સ્મરણ જરૂર કરી શકાય છે. માનવમૂર્તિ પણ મનુષ્ય નથી. માનવ છબી પણ સળંગ સમગ્ર જીવંત માનવી નથી જ, છતાં એ જડતાંમાં ઉતરી આવેલું એકાદ ક્ષણનું સજીવનપણું આપણને તે સજીવ ઓળખવા પ્રેરે છે. આજે મારી દૃષ્ટિ સમીપ જગતના એક ભવ્ય મૂર્તિ ભંજકની તેજસ્વી મૂર્તિ ખડી થાય છે. એ મૂર્તિના અધિષ્ઠાતા મહર્ષિ દયાનન્દને મારા અનેક વંદન.

આર્યધર્મના વિસ્તૃત ઈતિહાસમાં મહર્ષિ દયાનન્દ અક આપણા માર્ગ સ્થંભ છે, આપણા કીર્તિ સ્થંભ છે. રાષ્ટ્ર સર્જવામાં નિષ્ફળ નીવડેલા મોગલો અને મરાઠાઓ પાસેથી એક ત્રીજી ખ્રિસ્તી પ્રજા મુગટો અને સિંહાસનો ખૂંચવી રહી હતી. એ હિન્દૂ મુસલમાનોની રાજકીય અણઆવડતની પાછળ કોઈ ભયાનક સામાજીક વિષ વહી રહ્યું હતું, જે હિંદૂ મુસ્લિમ સમાજના પાયા છિન્ન-ભિન્ન કરી રહ્યું હતું. એ વિષ હિન્દૂ મુસલમાનોના રાજકીય જીવનને જ નહીં પરંતુ સામાજીક જીવનને નષ્ટ કરવાની અણી ઉપર હતું. આર્યોનું આર્યાવર્ત અને મુસ્લિમોનું હિંદ રાજકીય દૃષ્ટિઓ તો પરાધીન થયા જ હતા, તથાપિ સાંસ્કૃતિક પરાધીનતાના સ્વીકારની પણ તેમને ઝાંખી થવા લાગી. આર્યાવર્ત-હિંદ ઝબકી ઉઠ્યું. હિન્દૂ-મુસલમાનોને ભય લાગ્યો કે ખ્રિસ્તી ધર્મ તેમના ઉપર આક્રમણ કરે છે.

પ્રમાણિક ધર્મપરિવર્તન માનને પાત્ર છે. પરંતુ કોઈની નિરાધારતા કે અશક્તિનો લાભ લઈ ધર્મ પલટો કરાવવો, ભય બતાવી ધર્માન્તર કરાવવું, લાલચ આપી નવીન ધર્મ સ્વીકારાવવો, અગર પોતાની વ્યાવહારિક ચઢતીને ધર્મનું સ્વરૂપ આપી બીજા ધર્મને તેટલા જ કારણે નિંદીને સ્વધર્મ છોડવા કોઈને ઉશ્કેરવા એ ધર્મ પણ નથી અને ધર્મપરિવર્તન પણ નથી. એવા દૂષિત પરિવર્તનનો કરાવનાર પોતાના જ ધર્મને ચૂકે છે. છતાં આવા અધર્મભર્યા ધર્મપરિવર્તનો કરાવવાની એક પ્રબળ ઈચ્છા રાજદ્વારી અને ધર્મગુરુ ખ્રિસ્તિઓમાં એક કાળે ઉત્પન્ન થઈ હતી, એ જાણીતી વાત છે. હિંદને ખ્રિસ્તી બનાવવાનું સ્વપ્ન તે વખતે વ્યાપક હતું. ખ્રિસ્તી પ્રજાને મળેલું હિંદનું રાજ્ય ખ્રિસ્તી ધર્મપાલનનો ઈશ્વરી બદલો હતો એમ બતાવવામાં આવતું હતું. એ. કે. જ્હોન કંપનીને ઈસુ ખ્રિસ્ત પોતાના અનુયાયી તરીકે સ્વીકારે કે કેમ એ આજે તો શક ભરેલું જ લાગે છે. સુવ્યવસ્થિત બ્રિટીશ પ્રજાની ઉન્નતિ તેના ખ્રિસ્તીપણાને આભારી હશે કે કેમ. તીવ્ર બુદ્ધિમાન હિંદવાસીઓના હૃદય વલોવાઈ રહ્યાં. "તલવાર ઉઠાવનાર તલવારથી જ મરે છે." એક ગાલ ઉપર તમાચો વાગે તો બીજો ગાલ ધરવો એવા સિદ્ધાંતની જાહેરાત કરતો ખ્રિસ્તી ધર્મ ખરેખર ચાણકય નીતિ ઉપર રચાયેલા સામ્રાજ્યો મેળવી આપે એ કદી પણ માની શકાય નહીં. પરંતુ ખ્રિસ્તી ધર્મના અંગીકાર – બાહ્ય અંગીકારમાં એવું કાંઈક તત્ત્વ હતું જ કે જે ખ્રિસ્તી ધર્મ પાળનારી પ્રજાને આગળ કરતું હતું. હિંદવાસીએ પોતાના અંતરમાં જોયું ત્યાં દેખાયું કે, હિંદવાસી એક નિર્બળ, કાયર, વિલાસી, વ્યવસ્થા શત્રુ, અલ્પ, સંતુષ્ટ, સ્વાર્થી અને ટૂંકી દૃષ્ટિવાળો વ્હેંતીયો બનતો જાય છે. વિચારશીલ વર્ગ ચમકી ઉઠ્યો, ચમકીને તેમણે જોવા માંડ્યું કે આ ખામીનું મૂળ શું? આચાર, વિચાર, રીતરિવાજ, ધર્મ, સમાજ એ સહુ આ વેધક દૃષ્ટિ નીચે આવી ગયા અને હજારો વર્ષની ખામીઓ – હજારો વર્ષના દોષોની એક ભયંકર પરંપરા નજરે પડી. ખરો અગર ખોટો હિંદુ કે મુસ્લીમધર્મ પાળી હિંદ દુર્ગતિ પામ્યે જતું હતું. શાથી? આત્મપોષણ, પશ્ચાતાપ સુધી દોષયજ્ઞની ક્રિયા શરુ થઈ અને એ મહાન ક્રિયા હિંદની પરાધીનતા જતાં સુધી ચાલુ જ રહેશે. પ્રાયશ્ચિત એટલે પાપ બાળવાની ક્રિયા, એ મહાન ક્રિયાના મુખ્ય અધ્વર્યુઓમાં સ્વામી દયાનન્દ મોખરે છે.

હાલ ધર્મ એ માત્ર Feudalism જમીનદારી સમાજ વ્યવસ્થાના એક અંગરૂપ ભલે મનાતો હોય – અત્યારના સમાજને રોધતો એક મહાપર્વત ભલે ગણાતો હોય છતાં ઐતિહાસિક દૃષ્ટિ ધર્મને નામે અનેક લાભ નોંધાવે છે. ધર્મની એક મહત્ત્વની ઉજળી બાજુ તે તેનું પ્રજાકીય સ્વરૂપ રાજા, જમીનદાર, ધનિક અને ગરીબ એ સહુને સામાજીક એકતાનું દર્શન કરાવનાર ધર્મ એ પ્રજાકીય બળ. ધર્મ એ પ્રજાનો સંસ્કાર અર્ક, ધર્મ એ પ્રજાને બંધારણ આપતું જીવન તત્ત્વ. આવી રીતે આપણે ધર્મને સમજી શકીએ, પછી તે ધર્મ ગમેતે નામ ધરાવતો હોય.

જો ધર્મ આવું બળ હોય તો હિંદુસ્તાન ધર્મીઓનો પ્રદેશ હોઈને પરાધીન કેમ બન્યો? મુસ્લીમ ધર્મની પ્રવૃત્તિ આ સ્થળે ન વિચારતા માત્ર હિંદુ ધર્મની જ પ્રવૃત્તિનો અત્રે વિચાર કરીશું. વિચારકોએ પોતાનો ધર્મ તપાસ્યો. આખી ઓગણીસમી સદી હિંદના – કહો કે જગતના મહાવિચારનું મૂળ હિંદુ ધર્મનો અભ્યાસ શરુ થયો. અને પ્રમાણિક અન્વેષણમાંથી ધર્મ વિશુદ્ધિના અનેક મોજા ઉછાળે ચઢ્યા. બ્રહ્મસમાજ, પ્રાર્થનાસમાજ, થીયોસૉફી, વેદાન્તનો વ્યવહારમાં ઉપયોગ કરવા પ્રવૃત્ત થતું રામકૃષ્ણ મિશન, શ્રેયસ્સાધક વર્ગ અને આર્યસમાજ જેવી પ્રવૃત્તિઓ હિંદના ધર્મ શુદ્ધિકરણની સાક્ષી પૂરે છે. હિંદુધર્મના શુદ્ધિકરણમાં આર્યસમાજનો મોટો ફાળો છે. અને એ આર્યસમાજની સ્થાપના કરનાર મહાન સંન્યાસી દયાનન્દ આપણા એક સમર્થ ધર્મગુરુ જ માત્ર નથી, તેઓ નવીન હિંદના અગ્રણી વિધાયક છે.

હિંદુ ધર્મનું આર્ય ધર્મ એવું વિશુદ્ધ નામકરણ કરી તેમાં મમત્ત્વ અને અભિમાન પ્રેરનાર આ સંન્યાસીની જીવનકથા અદ્ભૂત રસથી ભરેલી છે. મૂર્તિની સંકેત મર્યાદા ન સમજતા, મૂર્તિને જ ઈશ્વરતત્ત્વ સોંપી દઈ આપણે હિંદુઓએ અંધભક્તિ અખત્યાર કરી લીધી હતી. એક પાસે લાખો માનવીઓને એક ટંકનું ભોજન પણ મળતું ન હોય તે વખતે આપણે મૂર્તિઓ આગળ અન્નકૂટ અને છપ્પન ભોગ ધરાવતા હોઈએ, વસ્ત્રહીન ગરીબો તરફ તિરસ્કારથી પાઈ પૈસો ફેંકી ધાર્મિક ઘમંડ કરી આપણે મૂર્તિઓને કરોડોના શણગાર ધારણ કરાવવામાં જ ધર્મ સમાપ્ત થતો ગણીએ, કરોડો અજાણ માનવીઓને અજ્ઞાન રાખી આપણે ગાદીધારી અને મઠધારી ધર્માધિકારિઓ માટે

સોનાચાંદીની છડીઓ કરાવવી અને ભગવા ઝંડા ઉપર જરી કીનખાબની ભભક ચોઢીએ, આત્મ નિવેદનની ભાવના નીચે મૂર્તિઓ સાથે માનવ કન્યાઓ પરણાવીયે, ઉપવીત અને સમર્પણની ભવ્ય ક્રિયાઓ પછી આપણે આખા જગતથી અપવિત્ર બની જવાનો ભય સેવ્યા કરીએ, ન્યાતમાં ન્યાત અને તેમાં પાછા ગોળ અને ગોળમાં ફૂળ... આવી ન્યાતિઓની ભલભૂલામણી ઊભી કરી બાબરા ભૂતની માફક તેના ઉપર ચઢ-ઉતર કરવાની ક્રિયામાં જ આપણું જીવન પરોવાયેલું રાખીએ, રાજ્યોની ઉથલપાથલો થતી હોય તે તરફ આંખ મીંચિ દઈએ, ધર્મ આક્રમણને સમજવાને બદલે કળીકાળને માથે બધો દોષ નાખી જડમૂર્તિ, અભણ બ્રાહ્મણ અને વહેમ તથા રુઢિની પંરપરામાં જ બધી મોજ માણી સંતોષ કેળવીયે, કરોડો હિન્દુઓને અશ્પૃશ્યતાની ખીણમાં ધકેલી મૂકી હિંદુ ધર્મિઓની સંખ્યા ઘટતી હોવાનો પોકાર કરીએ, હિંદુ ધર્મનું એક ક્ષણ માટે પણ આવું ચિત્ર ખરું હોય તો તેથી શરમાવાની જરા પણ તૈયારી ન બતાવવી ત્યારે સહજ પ્રશ્ન ઊભો થાય... શું આનું નામ જ હિન્દુ ધર્મ!!! સ્વામી દયાનન્દને મહાશિવરાત્રીની એક કાળી રાતે આ પ્રશ્ન ઉદ્‌ભવ્યો. ક્ષુદ્ર જંતુથી પીડાતી મૂર્તિ પ્રભુ હોઈ શકે? તેમને ગેબી નાદ સંભળાયો કે મૂર્તિ એજ પ્રભુ નથી. ચૌદ વર્ષના બ્રહ્મચારી મૂળશંકરને મૂર્તિ પૂજાની મર્યાદા સમજાઈ. મૂર્તિપૂજા જે વહેમ ભર્યું માનસ ઉત્પન્ન કરે છે તેની તેમને પ્રતીતી થઈ અને હિંદુ ધર્મની પ્રચલીત ખામી દૂર કરવાની દૃઢતાના બીજ અહીં રોપાયા. મૂળશંકર એ સ્વામીજીનું પૂર્વાશ્રમનું નામ.

પ્રતાપી હૃદયોની કુમળાશ અદ્‌ભૂત હોય છે. માર્દવ એ વીરત્ત્વ વિરોધી ગુણ નથી. વીરત્ત્વ એટલે ક્રૂરતા નહીં. જીવનભરના કડક વ્રતધારી દયાનન્દે પોતાની પ્રિય બહેનનું મૃત્યું નિહાળ્યું અને પછી પોતાના વત્સલ મૂર્તિ કાકાનું મૃત્યું નિહાળ્યું. આ વીર વ્રતધારીના હૃદયમાં અકલ્પ્ય વેદના ઉદ્‌ભવી અને મૃત્યુની પાર દૃષ્ટિ નાખવાનું શરું કર્યું. મૃત્યુની સમસ્યા ઉકેલવા મથતો માનવી સામાન્યતાની પાર જાય છે અને અદભૂત રસને ઓવારે ઉતરે છે. કાળના પડદા ઉઘાડવા મથતો મનુષ્ય કંપ ઉપજાવે છે, તેમાંયે સોળ - સત્તર વર્ષનો કિશોર મૃત્યુ સામે મીટ માંડે ત્યારે તેની આસપાસના મનુષ્યો કંપી જાય એમાં નવાઈ નહીં. મૂળશંકરના માતા-પિતા કંપી ઉઠ્યા. પુરુષને મોટામાં મોટું પ્રલોભન સ્રીનું. વૃદ્ધો પણ વિચારતા કંપે એવા કૂટ પ્રશ્નોની ઉકેલમાં ગૂંથાતા તેજ મૂળશંકર ના પુરુષત્ત્વને પત્નીનું પ્રલોભન અપાયું. પરંતુ મૂળશંકર પ્રલોભનથી પર હતો. મૂળશંકરનું પુરુષત્ત્વ પલંગ પથારી શોધતું લોલુપભર્યું સામાન્ય સહેલાણીનું પુરુષત્ત્વ ન હતું. એને પુરુષત્ત્વને મૃત્યુ ઓળંગવું હતું. મૃત્યુની પાર રહેલા પ્રદેશો નિહાળવા હતા. એ સાહસભર્યું હૃદય ઉછળતું હતું. પ્રભુને પિછાણી તેની પિછાણ પોતાના નિર્બળ દેશ બાંધવોને આપવી. પ્રભુની ઓળખ આપે એ ધર્મ – આર્યધર્મની બંધ થઈ ગયેલી બારીઓને ખોલી નાખી પ્રભુના વરેણ્ય ભર્ગ સર્વત્ર વહેવરાવવાની મહેચ્છા સિદ્ધ કરવા મથતો એ વર્તમાન શુકદેવ અંતઃપુરમાં પૂરાઈ રહે એ શકય ન હતું. લગ્ન અને ગૃહસ્થાશ્રમને ઠેકી કાળવિજેતા મૂળશંકર આગળ નીકળી ગયો. સત્યની શોધમાં તેણે ઘર મૂકયું, ગામ મૂકયું, પ્રાન્ત મૂકયો અને સુખ પણ મૂકયું. આપણે સામાન્ય મનુષ્યો સુખ ભોગવીને સુખી થઈએ છીએ, મહાપુરુષો અન્યને ભોગવડાવી સુખી થાય છે. મહાન યુવક મૂળશંકર અન્યને માટે સુખ શોધતો, ભ્રમણશીલ તપસ્વી બની ગયો. એક વખત પકડાયા છતા પલાયન કરી પોતાને માર્ગે ચાલ્યો ગયો.

વધારે આવતા અંકમાં.

गौ–दान : महा–दान

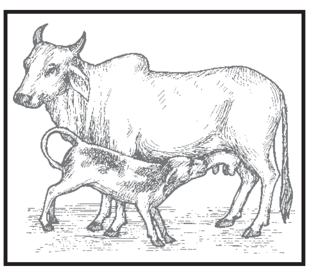

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन– प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20,000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति और आयुष चिकित्सक

❒ डॉ. अनूप कुमार गक्खड़

आयुर्वेद शिक्षा पद्धति में शिक्षित हुए अनेक चिकित्सकों द्वारा आयुर्वेद औषधियों के प्रयोग न करने से एक ओर जहाँ इस पद्धति के प्रचार-प्रसार में बाधा पड़ती है वहीं बहुत से रोगी इस पद्धति के लाभों से वंचित रह जाते हैं। इसी कारण समाज में बहुत से स्वंभू चिकित्सक पैदा होते जाते हैं जो आयुर्वेद के नाम पर लोगों को ठगते हैं। इसके फलस्वरूप इस चिकित्सा पद्धति का समाज में वह स्वरूप परिलक्षित नहीं हो पाता जो कि वास्तव में इसका यथार्थ स्वरूप है।

किसी देश को नष्ट करने के लिए सेना की आवश्यकता नहीं होती अपितु उसकी सभ्यता और संस्कृति को नष्ट कर देने से ही उस देश का नाश हो जाता है। आयुर्वेद इस देश की सभ्यता व संस्कृति का ही एक अंग है। अत: इसको संजोए रखना आवश्यक है। इसके संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य अच्छी तरह आयुर्वेद चिकित्सकों के अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता। लेकिन व्यवहार में देखा जाता है कि आयुर्वेद के बहुत सारे चिकित्सक अपनी पद्धति की औषधियों को छोड़कर आयुर्वेद से इतर चिकित्सा पद्धति पर आश्रित रहते हैं।

अगर इस व्यक्तिक्रम का सूक्ष्म अवलोकन किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि इस प्रकार के असामान्य व्यवहार के लिए वे किसी द्वेष या पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं हैं अपितु वे अपने शिक्षा काल में आयुर्वेद की विशेषताओं के ज्ञान से संस्कारित नहीं हो पाते।

हमारे देश में बहुत सारे आयुर्वेदिक कॉलेज ऐसे हैं जहाँ विद्यार्थियों को अपने अध्ययन काल में एक भी रोगी देखना नसीब नहीं होता।

बच्चा बचपन में जो देखता है, सीखता है उसका उस पर अमिट प्रभाव पड़ता है। इसी तरह आयुर्वेद कॉलेज में अपने अध्ययन काल की शैशवावस्था में वह जो देखता है उसका प्रभाव सीमेण्ट की तरह उसके मन एवं मस्तिष्क में स्थिर हो जाता है।

विद्यार्थी के लिए उसके अध्यापक उसका आदर्श होते हैं। अगर उसके अध्यापक आयुर्वेदिक चिकित्सा से समाज में रोगियों को ठीक कर यश व अर्थ अर्जित कर रहे हों तो कौन सा विद्यार्थी इतना मूढ़ होगा कि वह उनके पद चिन्हों पर न चले? इसमें उन चिकित्सकों का उतना दोष नहीं है। इसमें वो वाली बात हुई कि अगर किसी को पोषित करने की जिम्मेदारी हमारी है, हम उसे बिना कोई पोषक द्रव्य दिए, उसके हट्टा-कट्टा पहलवान न बनने की शिकायत उसी से करें।

जिस तरह के चिकित्सक हम समाज में चाहते हैं, उसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षकों को वह स्वरूप अपने आचरण में लाना चाहिए। आयुर्वेद की शाश्तता, नित्यता व अनादित्व के ज्ञान को हमारे ऋषि-मुनियों ने न केवल संजोए रखा अपितु इस परम्परा का निर्वाह भी उचित ढंग से करते रहे। अब इस ज्ञान परम्परा को आगे देने की प्रक्रिया की व्यवस्था ऋषि-मुनियों के हाथों से निकल कर व्यापारियों के हाथों में आ गयी है। बहुत सारे निजी आयुर्वेदिक कॉलेजों के मालिक केवल एक ही बात का ध्यान रखते हैं कि कैसे कम से कम पैसा लगाकर अधिक से अधिक लाभ कमाया जाय। इसके लिए वे अपने कॉलेज को उतना ही पोषित करेंगे जिससे कि उसकी सांस चलती रहे व मृतप्राय न हो जाएँ।

चिकित्सा पद्धति के विकास से उनको कोई मतलब नहीं होता। जिस किसी को आयुर्वेदिक कॉलेज चलाने से वांछित लाभ नहीं हुआ, उसने उसी भवन में कोई दूसरा कोर्स शुरु कर दिया।

जहां सामाजिक ढाँचा इस प्रकार का हो वहाँ नैतिक मर्यादाओं से पोषित अपेक्षाओं की पूर्ति करना असम्भव तो नहीं अपितु कठिन अवश्य है। आयुर्वेद के चिकित्सकों को आयुर्वेद सीखने को नहीं मिला तो इसमें लज्जित होने की बात नहीं है। हाँ, अगर वो अब भी सीखने को तैयार नहीं है तो इससे शर्मसार बात और कोई नहीं।

बहुत सारे अनपढ़ लोग समाज में आयुर्वेद के चिकित्सक बनकर कमायी कर रहे हैं, और अगर वास्तव में आयुर्वेद के चिकित्सक आयुर्वेद से चिकित्सा करें तो वे अर्थ और यश दोनों के भागी होंगे। इससे जो आत्मसम्मान मिलेगा, जो गौरव उन्हें प्राप्त होगा उसकी सुखद अनुभूति का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। सीखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि सीखने की जनून पैदा करना। जिस दिन यह पैदा हो जाएगा उसी दिन सब अवरोध अवसरों में प्रतीत हो जायेंगे।

आयुर्वेद का ज्ञान इसके आर्ष ग्रन्थों में भरा हुआ है। इनका नित्य कुछ समय का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। चिकित्सक जिन्दगी भर के लिए विद्यार्थी रहता है। अत: अध्ययन के लिए जिन्दगी की आखिरी सांस से पहले पूर्ण विराम नहीं लगना चाहिए। चरक, सुश्रुत व वाग्भट्ट के ग्रन्थों में अटूट आस्था चाहिए।

इन ग्रन्थों में पूर्ण विश्वास करके चिकित्सा करने वाला कभी भी पराजित नहीं होगा। बार-बार अध्ययन से नयी बातें सीखने को मिलती हैं, तीर्थ, शास्त्र, गुरु, मन्त्र व औषधि पर जिसकी जितनी श्रद्धा होती है उतना उसको लाभ मिलता है।

अत: चरक संहिता, सुश्रुत संहिता जैसे ग्रन्थ जो चिकित्सक श्रद्धा के साथ पढ़कर चिकित्सा करेगा वह नव ज्वर के रोगी को दूध के साथ ब्रेड खाने को नहीं कहेगा, अर्श के रोगी को अधिक पानी पीने को नहीं कहेगा, मेडिकल रिप्रेजेन्टेटिव द्वारा दी गयी गिफ्ट सहित औषधियों को अकारण नहीं लिखेगा। उसमें इस पद्धति के बारे में सही सोच विकसित होगी।

कुछ पत्रिकाएं केवल आयुर्वेद के व्यवहारिक पक्ष को उजागर कर उनका काम सुलभ कर रही हैं। उनमें से चिकित्सा पल्लव पत्रिका भी है। उनको नित्य अवश्य पढ़ना चाहिए। इस तरह आयुर्वेद से चिकित्सा करने पर हम अपनी जो कमायी करेंगे वह न्यायपूर्वक अर्जित की गयी होगी।

केवल न्यायपूर्वक अर्जित की गयी कमायी को हम धर्मा, यश, अर्थ, काम व स्वजन में वर्गीकरण कर प्रयोग कर सकते हैं।

याद रखें विद्या बहुल, विश्वगुरु, धर्म प्राण देश भारत सदैव आध्यात्म चेतना, संस्कृति और सदाचार का केन्द्र रहा है। हम उसकी निर्धारित प्रक्रिया तोड़कर क्यों पाप के भागी बनें?

मानव शरीर को हम अपने प्रयास से नहीं अपितु ईश्वर की अहैतुकी करूणा से प्राप्त करते हैं। इस शरीर का प्रयोग छल, फरेब के लिए क्यों करें? अपने धर्म, कर्त्तव्य का पालन कर हम अपने लोक व परलोक को सुधार सकते हैं। अथर्ववेद में भी लिखा है कि केवल पुण्य से कमाया हुआ धन सुख का कारण होता है। जब घर के मालिक घर की रक्षा नहीं करेंगे तो चोरों को अतिक्रमण करना ही है। वे हमारी सम्पत्ति की रक्षा नहीं अपितु उसका दोहन ही करेंगे। आवश्यकता है हम अपने उत्तर दायित्व का निर्वाहन स्वयं इज्जतदार ढंग से करें।

– विभागाध्यक्ष-संहिता संस्कृत एवं सिद्धान्त ऋषिकुल राजकीय स्नातकोत्तर
आयुर्वेदिक कॉलेज एवं चिकित्सालय, हरिद्वार

नोटिस-मकान खाली करो

❒ देवराज आर्यमित्र

एक व्यक्ति को किसी शहर में अच्छी नौकरी मिल गयी। उसे वहां रहने के लिए मकान की आवश्यकता हुई। कहीं कोई अपना मकान किराए पर देने के लिए तैयार नहीं था। वैसे भी छड़े (अविवाहित)को रहने के लिए जगह मुश्किल से मिलती है। बहुत तलाश करने पर एक मकान मालिक कुछ शर्ता पर कमेंट लिखने पर तैयार हो गया। युवक ने अपने पहचान-पत्र के साथ मालिक की सब बातों को मानकर मकान में रहना शुरु कर दिया।

एक-दो महीने में जब उसे अच्छा वेतन मिलने लगा, तब वह हर सप्ताह नयी-नयी फिल्में देखने जाने लगा। खाना तो पहले से ही होटल में खाता था। यार-दोस्तों का सर्कल (दायरा) भी बढ़ता गया। दोस्तों के साथ मिलकर धूम्रपान व मद्यपान करना सीख लिया। जब पीने-पिलाने की आदत पक गयी, तब अपने मकान में भी मित्रों के साथ शराब पीने लगा। होटल से मंगाकर मांस-मछली, अण्डे खाने लगा। मित्रमण्डली की युवतियां भी आने जाने लगीं।

मकान मालिक किराएदार की ये सब हरकतें देखकर बड़ा दु:खी हुआ। उसने एक दिन किराएदार को कहा कि तुम एग्रीमेंट में लिखी सब बातों को भुलाकर उनका उल्लंघन कर रहे हो। कृपया शीघ्र ही मकान खाली कर दो। उस युवक ने मकान मालिक के कहने पर कुछ ध्यान नहीं दिया, और वैसे ही मौज-मस्ती से रहता रहा। मालिक ने एक वकील के द्वारा नोटिस भेजा। फिर भी कुछ प्रभाव नहीं हुआ। अन्त में कोर्ट में दावा कर दिया। कोर्ट से सम्मन आने लगे, लेकिन वह किसी भी तारीख पर हाजिर नहीं हुआ। कोर्ट के निर्णय के अनुसार पुलिस के द्वारा जबरन मकान खाली कराया गया।

प्रिय सज्जनों! यह मानव शरीर भी आलीशन मकान है, जिसे मालिक (ईश्वर) ने रहने के लिए दिया है। इसमें रहने के लिए एग्रीमेंट भी बनाया गया है। नियमों एवं सिद्धांतों का पालन करते हुए एक सौ वर्ष इसमें रह सकते हो। यदि यम-नियमों का पालन करते रहे, तो सौ वर्ष से अधिक भी रह सकते हो। यदि मालिक की शर्तो का उल्लंघन किया गया, तो उस युवक किरायेदार की तरह दुर्व्यसनों में फंसकर मकान को गन्दा करोगे। तब मकान खाली करने के नोटिस आने लगेंगे। जैसे पहला नोटिस सिर के बाल सफेद हो गये, दूसरा नोटिस आंखों की दृष्टि क्षीण हो गयी, तीसरा कानों से कम सुनने लगा, चौथा मुंह में दांत नहीं रहना, पांचवा घुटनों से चला नहीं जाता।

इतने नोटिस आने पर भी मूर्ख मानव कुछ ध्यान नहीं देता है। मनमानी करता ही रहता है। आंखों पर चश्मा लगा लेता है, मुंह में बनावटी दांत लगा लेता है, कान में हियरिंग मशीन लगा लेता है, परन्तु मकान मालिक के नियमों के विरूद्ध चलता रहता है। मन और इन्द्रियों के वशीभूत होकर कुपथ्य करता रहता है।

अन्त में परिणाम क्या होता है? वह अनेक रोगों में ग्रस्त हो जाता है, और सौ वर्ष से पहले ही मकान खाली करके चला जाता है अर्थात् शरीर को छोड़ देता है अर्थात् शरीर को छोड़ देता है। सज्जनों! ईश्वर के दिये हुए शानदार बंगले में दीर्घायु तक रहना चाहते हो, तो कुकर्मो, दुर्व्यसनों को त्यागकर श्रेष्ठ कर्मो की पूंजी संग्रह करना शुरु कर दो। मकान को शुद्ध पवित्र बनाकर रखो। विषय-वासनाओं में फंसकर क्षीण-हीन मत बनाओ। जब अवधि पूरी हो जाए, तो हंसते-बोलते हुए खुशी से मकान छोड़ दो।

- डब्ल्यू जेड-428, हरीनगर, नई दिल्ली-64

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

समाचार दर्पण

महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा 50वां स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

17 जुलाई 2016 को महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा का 50वां स्थापना दिवस समारोह टंकारा परिसर में आयोजित किया गया। सर्वप्रथम प्रातः यज्ञशाला में यज्ञ का शुभारम्भ हुआ जिसमें मुख्य यज्ञमान श्री अढिया परिवार एवम् श्री छांटबार परिवार उपस्थित थे। उन्हीं द्वारा यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामदेव जी का वर्ण हुआ। उपरोक्त यजमान टंकारा ट्रस्ट द्वारा संचालित गौशाला में प्रतिवर्ष कई ट्रक सुखा एवम् हरा चारा दान स्वरूप भेजते है। इसी अवसर पर स्थानीय नेता श्री खोडापीपर एवं ऋषिभक्त श्री दयाभाई जी का भी सम्मान हुआ।

इस अवसर पर बृहद् सौराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा एवम् आर्य समाज राजकोट के प्रधान श्री रंजीत सिंह परमार आर्य समाज जामनगर के डॉ. अविनाश जी भट् उपस्थित थे। इस अवसर पर यज्ञवेदी पर बच्चों ने उत्साहपूर्वक भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया एवम् ब्रह्मचारियों द्वारा ही प्रवचन इत्यादि भी दिए गए। ब्रह्मचारियों की प्रभावपूर्ण प्रस्तुति को देखते हुए सभी ने उपदेशक महाविद्यालय द्वारा तैयार किये जा रहे इन बाल उपदेशको की प्रतिभा की सराहना की। और मानराशि भी दी।

अधिक बरसात होने के कारण इस कार्यक्रम को इस वर्ष सादगी से आयोजित किया गया था। अन्त में सभी का धन्यवाद करते हुए आचार्य श्री रामदेव जी ने अपना वक्तत्व दिया। कार्यक्रम के उपरान्त सभी उपस्थित व्यक्तियों के प्रीतिभोज का भी प्रबन्ध था।

सत्यार्थ प्रकाश 10 रु. में विक्रय किया

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा की अगुवाई में नरदेव आर्य, ओमप्रकाश आर्य, रामचरण आर्य, प्रेमनाथ कौशल, के. सी. श्योराज वशिष्ठ, योगेश आर्य, शैलेश, रमेशचन्द्र, जोतसिंह ने भीड़ वाले रावतभाटा हाट बाजार, कोटा में बस स्टैण्ड पर 10/- में सत्यार्थ प्रकाश बेचे। अर्जुन देव चड्ढा ने गले में मेधा माइक डालकर माइक से भीड़ एकत्रित कर आवाज लगाकर महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश 500 पृष्ठों व 5000 कीमत का मात्र दस रुपए में दिया जा रहा है तो सत्यार्थ प्रकाश लेने वालों की लाइन लग गई।

देखते ही देखते 100 सत्यार्थ प्रकाश बिक गए। इस अवसर पर चड्ढा ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश घर-घर पहुंचाने के लिए आर्यसमाज को कार्यक्रम बनाने होंगे।

आर्य महिला अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज के क्षेत्र में जो महिलाएं, संन्यासिनी, उपदेशिका, भजनोपदेशिका के रूप में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रही हैं अथवा जो कन्या गुरुकुलों में आचार्या हैं अथवा अध्यापन का कार्य कर रही हैं अथवा किसी भी रूप में आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ा रही हैं। हम उन सभी का अभिनन्दन करेंगे। संपूर्ण विवरण, कार्य क्षेत्र, शिक्षा आदि लिखकर भेजें।

निवेदक:

ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट

ए-41, लाजपत नगर-द्वितीय

(निकट मैट्रो स्टेशन), नई दिल्ली-110024

फोन : 011-45791152, 29842527, 9599107207

e-mail- manusanskritisansthan@gmail.com

सार्वदेशिक आर्य वीरांगन दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर जम्मू में सम्पन्न

वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिए मातृशक्ति का प्रशिक्षण अत्यावश्यक है–धर्मपाल आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू व कश्मीर के तत्वावधान में 5 से 12 जून 2016 तक नरगिस दत्त मान्टेसरी पब्लिक हाई स्कूल, आर.एस. पुरा, जम्मू में सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ जिसमें 14 से 20 वर्षीय आर्य वीरांगनाओं ने भाग लिया। शिविर के समापन समारोह का शुभारम्भ श्री श्याम लाल चौधरी, मंत्री पी.एच.ई. सिंचाई बाढ़ नियंत्रण विभाग जम्मू ने ध्वजारोहण से किया। साध्वी डा. उत्तमयति ने अतिथियों का स्वागत करते हुए शिविर के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि लड़कियों को शारीरिक व मानसिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने व जीवन के हर क्षेत्र में उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण और जीवन के नैतिक मूल्यों को समझाने का प्रयास इन शिविरों में किया जाता है। शिविर में भारत के विभिन्न प्रान्तों की लगभग 100 आर्यवीरांगनाओं ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम में श्री भारत भूषण आर्य वरिष्ठ उपाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू व कश्मीर ने अपने सम्बोधन में कहा कि महर्षि दयानन्द एक महान संत, समाज सुधारक, भारत के एक प्रेरक आदर्श थे। वे महिला सशक्तिकरण के कट्टर समर्थक थे। कार्यक्रम में बी.एस.एफ. 192 बटालियन आर.एस. पुरा के श्री एस.पी.एस. सन्धू ने पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा – माता ही निर्माता होती है अत: वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिए मातृशक्ति का प्रशिक्षण अत्यावक है। कार्यक्रम में श्रीमती मृदुला चौहान, श्रीमती आरती खुराना, श्रीमती विमला मलिक, श्रीमती सुकीर्ति चौधरी, दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान जी ने भी सम्बोधित किया। ज.क. सभा के प्रधान श्री राकेश चौहान ने सभी वीरांगनाओं व कार्यकर्ताओं का धन्यवाद किया।

51 कुण्डीय महायज्ञ

<u>डी.ए.वी. पुण्डरी हरियाणा</u> में डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्तृ समिति व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान आर्यरत्न डा. पूनम सूरी जी के दिशानिर्देशन तथा प्राचार्या श्रीमती साधना बख्शी जी की अध्यक्षता में सप्तदिवसीय महिला योग प्रशिक्षण शिविर के समान अवसर पर 51 कुण्डीय महायज्ञ आचार्य रवीन्द्र कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में भव्य समारोह पूर्वक सम्पन्न किया गया। इस महिला योग प्रशिक्षण शिविर में प्रतिदिन शहर के लगभग 200 महिलाओं ने योग एवं प्राणायाम कर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। इस शिविर में मुख्य प्रशिक्षक श्री दिलबाग सिंह ने अष्टांग योग करवा कर तथा उसके महत्व बताकर भव्य महिला योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न करवाया। समापन अवसर पर शिविरार्थियों द्वारा अपना अनुभव भी प्रकट किए गए। इस शिविर में सहायक प्रशिक्षिका सुमनलता, कोमल चौधरी, सीमा रानी का भी विशेष योगदान रहा।

व्यक्तित्व विकास शिविर सम्पन्न

<u>सार्वदेशिक आर्ययुवक परिषद्, आर्य समाज जयपुर (दक्षिण)</u> एवं जी.एल. सैनी नर्सिंग कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में आर्य युवा चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास आवासीय शिविर जी.एल. नर्सिंग कॉलेज में सम्पन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन ध्वजारोहण के साथ न्यायाधीश श्री प्रशान्त अग्रवाल द्वारा हुआ। अपने संबोधन में न्यायाधीश श्री प्रशान्त अग्रवाल ने उल्लेख किया कि इस प्रकार के शिविर ही युवा पीढ़ी को शौर्य एवं संस्कार प्रदान करने के माध्यम हैं। शिविर के मुख्य आकर्षण रहे जूडो-कराटे, मार्शल आर्ट, लाठी परिचालन के एवं संकटकालीन स्थिति में आत्मरक्षा, स्वास्थ्य संवर्धन हेतु योग-आसन, व्यायाम, प्राणायाम, सूर्यनमस्कार एवं व्यायाम प्रशिक्षण, बौद्धिक विकास के लिए धर्म-संस्कृति, इतिहास आदि के साथ ध्यान यज्ञ-ईश्वरोपासना। शिविरार्थियों को कुशल प्रशिक्षक द्वारा हुआ। प्रात:कालीन यज्ञोपरांत एवं सायंकालीन सत्रों में आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्र सिंह आर्य एवं पं. लेखराज शर्मा भजनों से सरसता बनाए रहे।

वानप्रस्थ साधक आश्रम में यज्ञ

रोजड़ गुजरात वानप्रस्थ आश्रम में देश भर से पधारे, आश्रम के हितैषी, सहयोगी, शुभचिन्तक महानुभावों ने विशेष आकार-प्रकार से बने यज्ञ कुण्डों में अग्नि प्रज्ज्वलित की। जिसमें विशेष पदार्थों से सुसंस्कृत गोघृत तथा उत्कृष्ट जड़ी-बूटियों से निर्मित हवन सामग्री से 12 घण्टे निरन्तर यज्ञ सम्पन्न हो रहा है। 75 दिन हो गये हैं, चारों वेदों के विशिष्ट मंत्रों से, प्रमाणों के अनुसार प्रतिदिन लाखों घनमीटर भेषज वायु उत्पन्न हो रही है जो आकाश में स्थित प्रदूषित-विषाक्त वायु को नष्ट करती है। वायु से जल शुद्ध होता है, जल से पृथ्वी। प्रतिदिन सुबह से सायंकाल तक 5-10-20-40 व्यक्ति कभी भी यहां आकर आहुतियां देते हैं और यज्ञाग्नि से प्रेरणा, उत्साह, पराक्रम को प्राप्त करके कृत-कृत्य मानते हैं, एक अद्भुत वातावरण बन जाता है आहुतियां देने से रुकने की इच्छा नहीं होती है। मेरी इच्छा है ऐसे यज्ञ मंदिर प्रान्त-प्रान्त में, नगर-नगर में बनें, जहां व्यक्ति अपनी अनुकूलता से सपरिवार मित्रों सम्बन्धियों के साथ कभी भी जाकर इच्छानुसार आहुतियां दे सके, समय का बन्धन न हो। ईश्वर की तो महती कृपा है ही किन्तु जिन सज्जनों, महाशयों, सहयोगियों, शुभचिन्तकों से हमें इस सर्वहितकारी, श्रेष्ठ कार्य करने के लिए उत्साह, प्रेरणा, सम्बल मिला। मैं व्यक्तिगत रूप से और संस्था के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं की ओर से अनुगृहीत हूं, धन्यवाद प्रकट करता हूं। हम आशा करते हैं कि यह आज के परिप्रेक्ष्य में अतिआवश्यक कार्य सतत भविष्य में चलता रहेगा, ऐसा विश्वास है।

22वां वार्षिकोत्सव

नगर के ख्यातिप्राप्त **आर्य समाज मानसरोवर, जयपुर** ने स्थापना का 22वां दिवस मनाया। इस अवसर पर भजन सन्ध्या का भव्य आयोजन हुआ। नगर के जाने माने वैदिक भजन गायकों ने अपनी प्रस्तुतियों से श्रोताओं को भाव विभोर रखा। समारोह के मुख्य अतिथि, लोकायुक्त माननीय श्री सज्जन सिंह कोठारी रहे एवं अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान सत्यव्रत सामवेदी ने की। आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान डा. कृष्णपाल सिंह ने समागम को संबोधित किया। आर्य समाज के प्रधान अर्जुन देव कालड़ा ने अब तक के प्रगति विवरण से अवगत कराया।

चुनाव समाचार

आर्य समाज, रोहिणी, सेक्टर-7, दिल्ली

प्रधान : श्री नरेश पाल आर्य **मंत्री :** श्री संजीव गर्ग

कोषाध्यक्ष : श्री देवराज आर्य

आर्य समाज, रामनगर, गुड़गांव, हरियाणा

प्रधान : श्री ओम प्रकाश चुटानी **मन्त्री :** श्री राधा कृष्ण सोलंकी

कोषाध्यक्ष : श्री भगवान दास मनचन्दा

आर्य समाज, नागदा जं., उज्जैन, म.प्र.

प्रधान : श्री पूनम चन्द आर्य **मन्त्री :** श्री कमल आर्य

कोषाध्यक्ष : श्री जगदीश पांचाल

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

शिवराजवती आर्या — उप-प्रधाना

रामनाथ सहगल — (मन्त्री)

(पृष्ठ 1 का शेष)

ब्रिटिश काल में शिमला की माल रोड पर लिखा था, हिन्दुस्तानियों और कुत्तों का इस सड़क पर प्रवेश निषिद्ध है।) मतलब यह कि उस समय भारतीयों को इस प्रकार घृणा की दृष्टि से देखा जाता था।

जिला मरदान में (अब पाकिस्तान में) एक बड़े गांव में आजादी से पूर्व एक अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर ने एक मीटिंग बुलाई थी उस मीटिंग में अधिकतर मुसलमान थे। डिप्टी कमिश्नर के साथ उसकी मेम साहब भी थी। एक मुसलमान खान ने खुशामद के रूप में डिप्टी कमिश्नर को कहा साहब यदि आप की मेम साहब परदा करती तो कितना अच्छा होता। डी.सी. ने प्रश्न किया कि आप के घरों में गाय, घोड़े, कुत्ते आदि पशु तो होते होंगे, क्या आप की औरतें उनसे परदा करती हैं? खान ने उत्तर दिया कि नहीं। तब डी.सी. ने कहा, जब आपकी औरतें उन पशुओं से परदा नहीं करती तो मेरी मेम साहब को आपसे परदा करने की क्या आवश्यकता है। तात्पर्य यह है कि उस समय अंग्रेज भारतीयों को पशुओं के समान समझते थे। इस प्रकार भारतीयों का घोर अपमान करते थे।

रावल पिंडी (अब पाकिस्तान) में एक समय कपड़े पर कन्ट्रोल था और सिविल सप्लाई अधिकारी ने अपने दो आदमियों को थोक में कपड़ा बेचने के लिए डिपो दे रखे थे। डिपो वाले दोनों दुकानदार भारी ब्लैक करते थे। इससे वहां के हम सब कपड़े के परचून दुकानदार डी.सी. (जो अंग्रेज था) की कोठी पर गए और बाहर चुपचाप बैठ गए। डी.सी. को सूचना दी कि दुकानदारों के प्रतिनिधि आपसे मिलना चाहते थे। बहुत देर के पश्चात डी.सी. कोठी से बाहर आया और आते ही कहा ''हम तुम से बात नहीं करना चाहता, पुलिस तफशीश करेगी।'' इतना कह कर डी.सी. कोठी के अन्दर चला गया। उस समय अंग्रेज अधिकारी जनता से बात भी नहीं करना चाहते थे।

आजादी से पूर्व ऐसी घटनाएं होती रहती थीं। अंग्रेजों के इस अन्याय, अत्याचार और दुर्व्यवहार से अत्यन्त दुखी होकर आजादी के परवानोंने आजादी की लड़ाई आरम्भ की। किस प्रकार क्रान्तिकारी वीरों ने लाठियां खाईं, गोलियां खाईं, जेलों की घोर यातनाएं सहन कीं। फांसी के तख्तों पर झूले, किस प्रकार माताओं के लाल, बहनों के भाई बलिदान हुए। किस प्रकार महिलाओं के सुहाग उजड़े, हजारों लाखों घर वीरान और बर्बाद हुए। मैं उन बातों का वर्णन करके आपके मन को दुखी नहीं करना चाहता, मैं तो केवल अपने देश के वीरों से इतना अनुरोध करना चाहता हूं कि देश की वर्तमान स्थिति अत्यंत चिन्ताजनक है। देश में आतंकवाद, अलगाववाद और सम्प्रदायवाद चरम सीमा पर है। निर्दोष लोगों की हत्याएं हो रही हैं। नन्हे मुन्ने बच्चों और स्त्रियों तक का खून बहाया जा रहा है। लूट खसूट जारी है। बाल वृद्ध स्त्री पुरुष कोई भी तो अपने आप को सुरक्षित नहीं समझता। देश की आर्थिक स्थितियां अत्यन्त खराब हैं। भ्रष्टाचार, दुराचार, अत्याचार बढ़ रहे हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति शपथ ले कि वह देश की रक्षा के लिए, देश में भय आतंक और निराशा को मिटाने के लिए जागरूक हो जाय।

– नाहन, ददाह, हिमाचल

महर्षि दयानन्द सरस्वती उपदेशक महाविद्यालय (टंकारा)

अध्यापकों की आवश्यकता

प्राच्य व्याकरण पद्धति से, गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) के पाठ्यक्रमानुसार पढ़ाने की क्षमता रखता हो ऐसे अध्यापक की आवश्यकता है। आचार्य, शास्त्री आदि की डिग्री हो या न हो तो भी आवेदन कर सकते हैं। वेतनमान योग्यतानुसारा। आवास-भोजनादि की व्यवस्था गुरुकुल में निःशुल्क होगी। गुरुकुल के आचार्य जी को अपनी योग्यतादि के विवरण समेत आवेदन भेजे।

आचार्य रामदेव जी

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,

डाक-टंकारा, जिला-मोरबी (गुजरात), पिन-363650, मो. 09913251448

प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया राजस्थान राज्य के अलवर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर है। यह गुरुकुल वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अतः समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि गुरुकुल में बालिकाओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें एवम् अपनी बालिकाओं को आज के परिपेक्ष में पूर्ण रूप से वीरांगना बनावें। बालिकाओं को स्वरक्षा एवम् वैदिक विदुषी के लिए प्रवेश दिलवायें। बालिकाओं के लिए पौष्टिक भोजन, कम्प्यूटर शिक्षा, सुव्यवस्थित छात्रावास एवम् बिजली जाने पर इन्वटर/जरनेटर की व्यवस्था।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

आचार्य प्रेमलता, आर्ष कन्या गुरुकुल

दाधिया, अलवर, राजस्थान-301401, फोन: 01495-270503, मो. 09416747308

(पृष्ठ 2 का शेष)

राशि देने में असमर्थता व्यक्त कर दी। तब मॉडल स्कूलों का पूरा भार राज्य शासन पर आ गया, नियमित शिक्षकों की भर्ती नहीं होने के कारण स्कूलों में शिक्षा का स्तर गिर रहा था। इस कारण राज्य सरकार ने अध्यादेश पास करके पब्लिक प्राइवेट साझेदारी के हिसाब से इन स्कूलों को चलाने के लिए कोई ऐसी संस्था ढूढ़ने का प्रयास हो रहा था जो इस कार्य को करने में सफल रहे।

पूरे भारतवर्ष में फैले डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं की प्रतिष्ठा किसी से छूपी हुई नहीं है। जिसे राज्य सरकार ने देखा, समझा और शिक्षण संस्थाओं के संचालन में डी.ए.वी. के अनुभव समेत सभी मापदंडो को देखते हुए इन 72 स्कूलों को डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली को डॉ. पूनम सूरी जी के नेतृत्व में सौंप दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार एक विशेष अध्यादेश विधानसभा द्वारा पारित कर यह निर्णय लिया गया। यहां यह बताना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि इनमें से कोई भी स्कूल दो से ढाई एकड़ से कम क्षेत्र में नहीं बने हुए है। सभी मॉडल स्कूल सी.बी.एस.ई स्तर पर मान्यता प्राप्त है और सभी इमारते पक्की बनी हुई है जो कि अपने आप में डी.ए.वी. के इतिहास में एक नया कीर्तिमान, जिनकी चर्चा आज से पूर्व कहीं नहीं हुई।

तीसरा कीर्तिमान सभी स्कूलों को देने का निर्णय अप्रैल 2016 के मध्य में किया गया। जिसमें 28 मई 2016 से प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई और 15 जून 2016 तक इस प्रक्रिया को पूर्ण कर सभी स्कूलों को सक्रिय भी कर दिया गया। इसी के साथ 31 हजार आवेदनों में से सभी महत्वपूर्ण शिक्षकों की नियुक्ति भी इसी समय में कर दी गई। यह भी एक कीर्तिमान स्थापित किया गया। वर्तमान में डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री द्वारा संचालित कुल शिक्षण संस्थाएं 901 हो चुकी है। यह भी एक विश्व स्तरीय कीर्तिमान है। किसी एक असरकारी संस्थान द्वारा इतनी शिक्षण संस्था का संचालन हो रहा है। भारत सरकार के बाद किसी एक संस्था का शिक्षा में बजट सबसे अधिक है। यह सभी उपरोक्त कीर्तिमान आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी के नेतृत्व में ही स्थापित हुए है।

डॉ. पूनम सूरी की दीर्घायु की कामना करते हुए शुभकामनाएं।

आर्य पुत्र विनय आर्य सम्मानित

आर्य समाज के लिए समर्पण के साथ अहर्निश कार्य करने एवं सतत परिश्रम करते हुए महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुंचाने में कर्तव्यनिष्ठ आर्यपुत्र विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को आर्य समाज जिला सभा कोटा ने सम्मानित किया। 15वें आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन के अवसर पर आर्य समाज जनकपुरी ए ब्लाक, नई दिल्ली में आयोजन के अवसर पर आर्य समाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने श्री विनय आर्य को केसरिया पगड़ी पहनाकर, माल्यार्पण के साथ शाल ओढ़ा कर सम्मान किया गया। इस अवसर पर श्री चड्ढा ने उन्हें श्रीफल व भेंटपूर्वक स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया।

सम्मान कार्यक्रम के अवसर पर बोलते हुए अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि यह विनय आर्य का सम्मान न होकर आर्यसमाज के लिए किए जा रहे उनके अथक परिश्रम एवं कार्यों का सम्मान है। हम इनसे प्रेरणा लेकर अपना जीवन आर्य समाज के प्रचार प्रसार में लगाना चाहिए। प्रभु इन्हें दीर्घायु प्रदान करें। इस अवसर पर कार्यक्रम में कोटा राजस्थान से पधारे आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, पं. श्योराज वशिष्ठ सहित आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के शिवकुमार मदान, एस.पी. सिंह, सतीश चड्ढा, सुखवीर आर्य, रमेश शास्त्री, वीरेन्द्र शास्त्री, आर्यसमाज जनकपुरी के प्रधान विक्रम नरूला, मंत्री वीरेन्द्र सरदाना, श्रीमती विभा आर्या, श्रीमती वीना आर्या सहित सैकड़ों की संख्या में आर्यजन एवं महिलाएं उपस्थित रहे।

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

जीवन में 'तकलीफ' उसी को आती है, जो हमेशा 'जिम्मेदारी' उठाने को तैयार रहते है। जिम्मेदारी लेने वाले कभी हारते नहीं, या तो 'जीतते'' है, या फिर 'सीखते' है।

माँ मुझे कोई और
स्वर्ग का नहीं पता....
क्योंकि हम मां के कदमों को ही
स्वर्ग कहते हैं!!

टंकारा समाचार अगस्त 2016
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-08-2016
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथिः 23.07.2016

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय